ऐसा बड़ा उद्धार

तथा अन्य प्रवचन

लेखक
सनी डेविड

सत्य सुसमाचार रेडियो संदेशमाला

प्रकाशक :
मसीह की कलीसिया
बॉक्स ३८१५
नई दिल्ली-११००४९

प्रथम संस्करण १९८०

प्रिंट इंडिया, मायापुरी

SO GREAT SALVATION
And Other Sermons

In

Hindi

by :

Sunny David

Introduction by : J. C. Choate

Published by
Church of Christ
Box 3815
New Delhi–110049

TABLE OF CONTENTS

1. For Many will Seek to Enter and shall not be Able ···1
2. The Right View of the Cross ···6
3. So Great Salvation ···11
4. Be Not Decieved ···16
5. Faith, a great and most Important Principle ···21
6. What is God Like ? ···26
7. What is Hell Like ? ···31
8. A Universal Problem ···36
9. There is Power in the Word ···41
10. Words of Life ···46
11. Concerning the Bible ···51
12. A Great Decision ! ·· 56

प्रस्तावना

बाइबल में उद्धार को एक बड़ी ही विशाल वस्तु कहा गया है। परन्तु क्यों ? क्योंकि इसका अभिप्राय मनुष्य की आत्मा को बचाने से है, और क्योंकि इसके लिये एक बहुत बड़ा दाम दिया गया है। अनेक लोग इस बात से परीचित न होने के कारण अपने उद्धार के महत्व को नहीं जानते। फिर, कुछ अन्य ऐसे भी हैं जो जीवन की अनिश्चयता तथा परमेश्वर की आज्ञाओं को मानने पर कोई ध्यान नहीं देते। इस कारण वे उद्धार के विशाल महत्व को उचित स्थान नहीं देते।

यह बात सचमुच में बड़ी ही अद्भुत है कि परमेश्वर ने हम सब से ऐसा प्रेम रखा कि उसने हम को हमारे पापों से बचाने के लिये अपने पुत्र यीशु मसीह को क्रूस पर बलिदान होने को दे दिया। परन्तु यद्यपि परमेश्वर ने मनुष्य पर इतना बड़ा अनुग्रह प्रगट किया, तौभी यदि मनुष्य मसीह पर विश्वास न लाएगा तथा उसकी आज्ञाओं को न मानेगा तो वह अपने पापों में ही नाश हो जाएगा।

परन्तु परमेश्वर के उद्धार का आपके निकट क्या अर्थ है ? क्या आपने उस उद्धार को पा लिया है ? प्रस्तुत पुस्तक के लेखक तथा सत्य सुसमाचार रेडियो कार्यक्रम के वक्ता भाई सनी डेविड ने इन प्रवचनों में हमें परमेश्वर के बड़े उद्धार के सम्बन्ध में बताया है तथा परमेश्वर की आज्ञाओं को मानकर उस बड़े उद्धार को प्राप्त करने की आवश्यकता पर बल दिया है। लेखक के प्रयत्न तथा परीश्रम और प्रस्तुत रचना की मैं प्रशंसा करता हूं, तथा मेरी परमेश्वर से प्रार्थना है कि आप इन प्रवचनों की सहायता से प्रभु की इच्छा को जानेंगे तथा उसकी आज्ञाओं का पालन करके उसके उद्धार को प्राप्त करेंगे।

जे० सी० चोट
मसीह की कलीसिया
नई दिल्ली

भूमिका

इस पुस्तक में आप "ऐसा बड़ा उद्धार" सहित बारह प्रवचनों को पढ़ेंगे। इन सभी प्रवचनों को मैंने विशेष रूप से रेडियो पर प्रसारण के लिये लिखा था। ये प्रवचन संक्षिप्त हैं, क्योंकि रेडियो पर उपलब्ध समय को दृष्टिकोण में रखकर इन्हें लिखा गया है। प्रत्येक प्रवचन को लिखते समय मेरा एकमात्र उद्देश्य यह रहता है कि मैं अपने सुननेवालों तथा पढ़नेवालों को परमेश्वर के वचन की सच्चाई से परीचित कराऊं तथा उन्हें परमेश्वर के उद्धार और मसीह के सुसमाचार का संदेश दूं। हमेशा की तरह, अपने पाठकों से मेरा यह व्यक्तिगत आग्रह है कि इन प्रवचनों को पढ़ते समय आप उन अध्यायों तथा पदों को, जिनका उल्लेख बाइबल से किया गया है, अपनी बाइबल में अवश्य देखें। अर्थात्, यदि आपके पास बाइबल उपलब्ध है, तो इन प्रवचनों को परमेश्वर के वचन के प्रकाश में पढ़ें। फिर, यदि इन बातों के सम्बन्ध में मैं आपकी कोई सहायता कर सकता हूं तो मुझे सूचित करें।

प्रभु का अनुग्रह उसके वचन पर चलनेवालों पर हमेशा होता रहे।

—लेखक

विषय सूच

१. बहुतेरे प्रवेश करना चाहेंगे परन्तु न कर सकेंगे ...१

२. क्रूस का उचित दृष्टिकोण ...६

३. ऐसा बड़ा उद्धार ...११

४. धोखा न खाओ ...१६

५. विश्वास, एक विशाल तथा महत्वपूर्ण सिद्धाँत ...२१

६. परमेश्वर किस के समान है ? ...२६

७. नरक किस के समान है ? ...३१

८. एक विश्वव्यापी समस्या ...३६

९. वचन में शक्ति है ...४१

१०. जीवन के वचन ...४६

११. बाइबल के सम्बन्ध में ...५१

१२. एक विशाल निश्चय ! ...५६

रेडियो से.....

"सत्य सुसमाचार" के साप्ताहिक प्रसारण रेडियो श्रीलंका द्वारा २५ तथा ४१ मीटर बैन्ड पर प्रत्येक :

मंगलवार—रात को ९ बजे से ९.१५ तक
बृस्पतिवार—रात को ९ बजे से ९.१५ तक
शुक्रवार—रात को ९ बजे से ९.१५ तक
रविवार—दिन में १.३० से १.४५ तक

वक्ता : **श्री सनी डेविड**

लेखक की अन्य उपलब्ध रचनाएं :

१. पन्द्रह प्रभावशाली रेडियो प्रवचन
२. बीस लघु रेडियो संदेश
३. मुक्ति के संदेश
४. हम किसके पास जाएं ?
५. यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे...
६. जीवन के वचन
७. मसीही संदेश
८. पुराने नियम के अनुसार
९. नए नियम के अनुसार
१०. मसीह के दावे

बहुतेरे प्रवेश करना चाहेंगे परन्तु न कर सकेंगे

मित्रो :

एक बार फिर से उसका धन्यवाद हो जिसने हमें जीवन और यह सुन्दर अवसर प्रदान किया है। जीवन वास्तव में एक यात्रा है। यद्यपि इस यात्रा को कोई पहिले समाप्त कर लेता है और कोई बाद में, किन्तु यह एक ऐसी यात्रा है जिस से मुंह नहीं मोड़ा जा सकता। परमेश्वर चाहता है कि पृथ्वी पर इस यात्रा को समाप्त कर लेने के बाद मनुष्य उसके पास आए। वह चाहता है, कि जब आप अपनी यात्रा पृथ्वी पर समाप्त कर लें तो आप उसके पास पहुंचे। उसने हमें अपना एक मार्ग दिया है जिस पर चलकर, अर्थात् जिसके द्वारा हम उसके पास पहुंच सकते हैं—अर्थात यीशु मसीह, परमेश्वर का एकलौता पुत्र, जिसने स्वर्ग से पृथ्वी पर आकर हमारे पापों के कारण अपना ही बलिदान दिया। वह हमारे कारण नीचे आ गया ताकि हम ऊपर पहुंच जाएं; वह हमारे कारण मर गया ताकि हम जीवन पाएं; उसने हमारे कारण अपने आप को दे दिया ताकि हम बच जाएं; और यद्यपि वह पाप से अज्ञात था, उसमें कोई पाप न था, तौभी उसे परमेश्वर ने हमारे कारण पापी मान लिया ताकि हम उसमें होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएं। (२ कुरिन्थियों ५:२१)। मनुष्य को परमेश्वर के पास पहुंचने से केवल एक ही वस्तु रोकती है, अर्थात पाप। और यीशु ने पाप के ही कारण अपना बलिदान दिया, अर्थात उसने हमारे पापों का बोझ अपने ऊपर उठा लिया और हमें मुक्त करके परमेश्वर के पास पहुंचने के योग्य बना

दिया। सो इसलिये हम अपनी यात्रा को समाप्त करके यीशु के द्वारा परमेश्वर के पास पहुंच सकते हैं।

परन्तु प्रभु यीशु ने एक जगह कहा, "जो मुझ से हे प्रभु, हे प्रभु कहता है, उन में से हर एक स्वर्ग के राज्य में प्रवेश न करेगा, परन्तु वही जो मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चलता है।" (मत्ती ७ : २१)।

वास्तव में, यदि देखा जाए तो हम में से प्रत्येक जन परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने की इच्छा अपने मन में रखता है। और हम में से अनेक ऐसे हैं जो अपने मन में यह विश्वास और भरोसा रखते हैं कि हम अवश्य ही परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करेंगे। परन्तु हमारा विचार गलत भी हो सकता है। हमारा विश्वास तथा भरोसा व्यर्थ भी प्रमाणित हो सकता है। कई बार हम किसी मनुष्य या किसी वस्तु पर भरोसा कर लेते हैं, किन्तु फिर हम पछताते हैं कि हम ने ऐसा क्यों किया। कई बार हम अपनी धारणाओं के आधार पर कोई काम कर बैठते हैं, उस समय हम सोचते हैं कि हम ठीक कर रहे हैं, किन्तु बाद में हम उसे करके पछताते हैं। अर्थात हम मनुष्य हैं और इस कारण हम से गलती भी हो सकती है।

जब यहूदिया के बैतलहम में यीशु का जन्म हुआ था तो उस समय हेरोदेस नाम का राजा वहां राज्य करता था। जब हेरोदेस को कुछ ज्योतिषियों के द्वारा पता चला कि उसके राज्य में एक राजा का जन्म हुआ है, तो उसने अपने सिपाहियों को आज्ञा देकर अपने राज्य में सब छोटे-छोटे बच्चों को मरवा दिया। क्योंकि वह डरता था कि कहीं उसका राज्य उसके हाथ से न चला जाए। यद्यपि परमेश्वर ने अपने पुत्र और संसार के उद्धारकर्त्ता को उसके हाथ से बचा लिया। परन्तु हेरोदेस न जानता था कि वह वास्तव में परमेश्वर के पुत्र और जगत के उद्धारकर्त्ता को मरवाने जा रहा है। वह इस बात से अनजान था कि यीशु जिस राज्य का राजा है वह इस जगत का नहीं है। (यूहन्ना १८ : ३६) वह

केवल इतना ही जानता था, उसे केवल इतना ही विश्वास था कि वह अपने एक शत्रु को नाश करवाने जा रहा है। परन्तु वह अपने विश्वास में गलत था।

इसी प्रकार बाइबल के पुराने नियम में हम शाऊल नाम के एक राजा के बारे में पढ़ते हैं। लिखा है, कि उसे परमेश्वर ने आज्ञा देकर कहा था कि तू जाकर परमेश्वर-विरोधी अमालेकियों और उनकी सब वस्तुओं को नाश करके आ। परन्तु जब शाऊल अपना काम समाप्त करके लौट रहा था, तो परमेश्वर ने अपने एक दूत को शाऊल के पास भेजा। शाऊल ने उसे देखकर खुश होकर कहा, कि देख मैंने परमेश्वर की आज्ञा पूरी की है। परन्तु परमेश्वर के जन ने उस से कहा, कि मैं यह जो जानवर इत्यादि तुम लोगों के साथ देख रहा हूं, क्या यह सब अमालेकियों के यहां से नहीं आए ? शाऊल ने तत्काल उत्तर देकर कहा, हां, हां, यह सब वहीं से आए हैं; परन्तु इन्हें हम अपने साथ परमेश्वर को बलिदान चढ़ाने के लिये ले कर आए हैं। इस पर लिखा है, कि परमेश्वर के जन ने शाऊल से कहा, कि क्या परमेश्वर ने तुझे सब कुछ नाश करने को न भेजा था ? इस कारण परमेश्वर ने मुझे तेरे पास यह आज्ञा देकर भेजा है, कि मैं तुझ से कहूं कि जिस प्रकार तू ने परमेश्वर की आज्ञा न मानकर उसे तुच्छ जाना है वैसे ही वह भी तुझे अब तुच्छ समझता है, और उसने अपनी सारी आशीषों को तेरे ऊपर से उठा लिया है। परमेश्वर के दूत ने शाऊल से कहा, कि क्या परमेश्वर बलिदानों और चढ़ावों से उतना प्रसन्न होता है जितना कि अपनी आज्ञा के माने जाने से प्रसन्न होता है ? यहां हम देखते हैं, कि शाऊल अपने मन में बड़ा ही प्रसन्न था क्योंकि उसका विश्वास था कि उसने परमेश्वर की आज्ञा को पूरा किया है। उसका पूरा भरोसा था कि परमेश्वर अवश्य ही उसे आशीष देगा। परन्तु शाऊल का विचार गलत था; उसका विश्वास और भरोसा व्यर्थ था। (१ शमूएल १५)।

अपने प्रचारकाल में प्रभु यीशु ने एक जगह कहा, कि न्याय के दिन बहुतेरे लोग मेरे सामने खड़े होकर मुझ से कहेंगे, कि हे प्रभु, हे प्रभु, हम तेरे राज्य में प्रवेश करने के योग्य हैं। क्योंकि देख, हमने जगत में तेरे नाम से प्रचार किया, तेरे नाम से अनेको बड़े-बड़े काम किए, हम ने तेरे नाम से प्रार्थनाएं कीं, और तेरे नाम से दान दिए और बड़े-बड़े धर्म के काम किए। परन्तु प्रभु ने उन्हें क्या जवाब दिया ? उसने कहा, "तब मैं उनसे खुलकर कह दूंगा कि मैंने तुम्हें कभी नहीं जाना, हे कुकर्म करनेवालो मेरे पास से चले जाओ।" यहां हम देखते हैं, कि इन लोगों को इस बात का पूरा विश्वास था, पूरा भरोसा था, और पूरा आश्वासन था, कि वे अपने जीवन की यात्रा के अन्त में अवश्य ही स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करेंगे। क्योंकि उन्होंने मसीह के नाम से बहुतेरे काम किए थे, वे उसमें विश्वास करते थे, उन्होंने उसे अपना उद्धारकर्त्ता ग्रहण किया था। परन्तु तौभी उनका विचार गलत था। उनका विश्वास और उनका भरोसा व्यर्थ था। लेकिन क्यों ? इसका उत्तर स्वयं प्रभु यीशु ने यह कहकर दिया :

"इसलिये जो कोई मेरी ये बातें सुनकर उन्हें मानता है वह उस बुद्धिमान मनुष्य की नाईं ठहरेगा जिस ने अपना घर चट्टान पर बनाया। और मेंह बरसा और बाढ़ें आईं, और आंधियां चलीं और उस घर पर टक्करें लगीं, परन्तु वह नहीं गिरा, क्योंकि उसकी नीव चट्टान पर डाली गई थी। परन्तु जो कोई मेरी ये बातें सुनता है और उन पर नहीं चलता वह उस निर्बुद्धि मनुष्य की नाईं ठहरेगा जिसने अपना घर बालू पर बनाया। और मेंह बरसा, और बाढ़ें आईं, और आंधियां चलीं, और उस घर पर टक्करें लगीं और वह गिरकर सत्यानाश हो गया।" (मत्ती ७:२४-२७)।

मित्रो, यद्यपि परमेश्वर हम सब से प्रेम करता है और चाहता है कि हम उसके राज्य में प्रवेश करें; उसने अपने एकलौते पुत्र को दे दिया ताकि हम उस के द्वारा जीवन पाएं। यद्यपि यीशु मसीह हमारे

पापों का प्रायश्चित है और हम उसके द्वारा परमेश्वर के राज्य में प्रवेश कर सकते हैं। परन्तु वह कहता है कि स्वर्ग के राज्य में केवल वही मनुष्य प्रवेश करेगा जो मेरी इच्छा पर चलता है, जो मेरी बातों को सुनकर उन्हें मानता है। सो यदि आप उसमें विश्वास करते हैं तो आप अच्छा करते हैं, यदि आप उसके नाम से धर्म के काम करते हैं तो आप बड़ा अच्छा करते हैं, और यदि आप उसे अपना उद्धारकर्त्ता मानते हैं तो यह भी आप अच्छा करते हैं। परन्तु यदि आप उसकी इच्छा पर नहीं चलते, यदि आप उसकी आज्ञाओं को नहीं मानते, तो इनमें से कोई भी वस्तु आपको स्वर्ग के राज्य में प्रवेश नहीं दिला सकती। और यदि आप ऐसा सोचते हैं तो आप एक बड़े भारी धोखे में हैं।

परमेश्वर ने अपनी इच्छा को अपने पुत्र यीशु के द्वारा मनुष्यों पर प्रगट किया है। और यीशु ने परमेश्वर की इच्छा को अपने प्रेरितों द्वारा लिखवाकर अपने नए नियम में हमें दिया है। इस कारण, परमेश्वर की इच्छा को जानने और उस पर चलने के लिये हमें चाहिए कि हम यीशु के नए नियम को पढें। यीशु के नए नियम में लिखा है, कि यदि कोई मनुष्य उद्धार पाना चाहे तो उसे मसीह यीशू में विश्वास करना चाहिए, और उसे अपना मन फिराना चाहिए, और उसे अपने पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा लेना चाहिए। (मरकुस १६ : १६; प्रेरितों २ : ३८)। स्वर्ग के राज्य की ओर जाने वाली दिशा में ये पहिले कदम हैं। क्योंकि यीशु की इन आज्ञाओं को मानकर हम उसकी कलीसिया अर्थात उद्धार पाए हुए लोगों की उसकी मण्डली में शामिल हो जाते हैं, और फिर यदि हम उसके नए नियम में लिखी आज्ञाओं के अनुसार उसकी इच्छा पर चलते रहें, तो हम अवश्य ही उसके द्वारा परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करेंगे। एक जगह प्रभु यीशु ने कहा, "सकेत द्वार से प्रवेश करने का यत्न करो, क्योंकि मैं तुम से कहता हूं, कि बहुतेरे प्रवेश करना चाहेंगे और न कर सकेंगे।" (लूका १३ : २४)।

परमेश्वर अपने वचन पर चलने के लिये आपको शक्ति दे।

—०—

क्रूस का उचित दृष्टिकोण

मित्रो :

मैं अपने को वास्तव में बड़ा ही भाग्यशाली समझता हूं, जबकि मेरे पास एक बार फिर से यह अवसर है कि मैं आपके मनों को प्रभु के जीवनदायक वचन की ओर लगाऊं। मनुष्य के उद्धार और मसीहीयत में सबसे मुख्य वस्तु मसीह यीशु का क्रूस है। प्रेरित पौलुस, पवित्र बाइबल में एक स्थान पर कहता है : "क्योंकि क्रूस की कथा नाश होने वालों के निकट मूर्खता है, परन्तु हम उद्धार पानेवालों के निकट परमेश्वर की सामर्थ है!" (१ कुरिन्थियों १ : १८)। क्रूस वह वस्तु है जिसके ऊपर परमेश्वर ने अपने पुत्र यीशु को हमारे पापों के प्रायश्चित के स्वरूप में बलिदान करवाया, और इस प्रकार परमेश्वर ने हमारे उद्धार के निमित्त अपनी सामर्थ को क्रूस के ऊपर प्रगट किया। मानवता के उद्धार के लिये परमेश्वर ने अपने ही पुत्र यीशु को क्रूस की मृत्यु जैसा कड़ा दन्ड दिलवाया। लगभग दो हज़ार वर्ष पूर्व, परमेश्वर के होनहार के ज्ञान के अनुसार, यीशु को लकड़ी से बने एक क्रूस के ऊपर कीलों से ठोंका गया। उस क्रूस पर चढ़े यीशु ने अत्यन्त पीड़ा, दुख और यातना का अनुभव किया। उस क्रूस के ऊपर यीशु ने अपना बलिदान दिया; वहां उसका पंजर भेदा गया, और उसके ऊपर से उसने अपना लोहु बहाया।

सो क्रूस पीड़ा, दुःख और यातना, और मृत्यु तथा बलिदान का एक निशान है। किन्तु इसके विपरीत, आज क्रूस करोड़ों लोगों के लिये देह को सुसज़्ज़ित करनेवाला एक आभूषण बन चुका है, और यहां तक कि

उसे प्रार्थना घरों के भीतर इतना अधिक महत्व मिला हुआ है कि लोग उसके सामने झुकते हैं और उसकी उपासना करते हैं।

यहां मैं आपका ध्यान इस बात पर दिलाना चाहता हूं कि मसीह से सैंकड़ों वर्ष पूर्व, मिस्र से निकलकर प्रतिज्ञा किए देश की ओर जाते समय जब इस्राएलियों ने परमेश्वर के विरुद्ध पाप किया था, तो लिखा है, उन्हें दन्ड देने के लिये परमेश्वर ने. उनके बीच तेज़ विषवाले सांप भेजे जो उन्हें आकर डसने लगे, और उनमें से बहुतेरे मर भी गए। किन्तु जब उन्होंने अपना मन फिराया, तो परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा देकर कहा, कि एक तेज़ विषवाले सांप की प्रतिमा बनवाकर खम्भे पर लटका और उन लोगों से कह कि सांप का डसा हुआ जो व्यक्ति उस प्रतिमा को देखेगा वह जीवित बचेगा। सो मूसा ने पीतल का एक सांप बनाकर खम्भे पर लटकाया, तब परमेश्वर की आज्ञानुसार जिन-जिन लोगों ने उस प्रतिमा की ओर देखा वे जीवित बच गए। (गिनती २१: ५-९)। किन्तु इस घटना के कुछ ही वर्ष पश्चात, हम आगे देखते हैं कि इस्राएलियों ने सांप की उसी प्रतिमा को पूजना शुरू कर दिया। वे उसके आगे धूप जलाने लगे और उसकी उपासना करने लगे। परन्तु परमेश्वर की दृष्टि में यह पाप था। इसलिये, बाइबल में, २ राजा की पुस्तक के १८ वें अध्याय में हम पढ़ते हैं, कि हिजकिय्याह ने उन लोगों की अन्य मूर्त्तों के साथ-साथ सांप की उस प्रतिमा को भी नाश करवाया।

अपनी मृत्यु से कुछ ही समय पूर्व प्रभु यीशु ने एक जगह कहा, "और जिस रीति से मूसा ने जंगल में सांप को ऊंचे पर चढ़ाया, उसी रीति से अवश्य है कि मनुष्य का पुत्र भी ऊंचे पर चढ़ाया जाए। ताकि जो कोई विश्वास करे उसमें अनन्त जीवन पाए।" (यूहन्ना ३:१४, १५)। यह बात यीशु ने इसलिये कही ताकि लोग जानें कि जिस प्रकार बीते समय में, जंगल में नाश हो रहे लोगों को बचाने के लिये, परमेश्वर ने अपनी सामर्थ को ऊंचे पर लटके सांप की प्रतिमा के द्वारा प्रगट किया

था, उसी प्रकार जगत में पाप के भीतर नाश हो रहे लोगों को बचाने के लिये परमेश्वर अपनी सामर्थ को क्रूस पर चढ़े यीशु के द्वारा प्रगट करेगा। किन्तु जगत के पापों के प्रायश्चित, के रूप में क्रूस पर यीशु की मृत्यु के कई वर्ष पश्चात लोगों ने क्रूस को वही रूप देना आरम्भ कर दिया जैसा कि वर्षों पहिले इस्राएलियों ने ऊंचे पर चढ़े सांप की उस प्रतिमा को दिया था। लोग सोने, चांदी, लकड़ी और कीमती पत्थरों के क्रूस बनाने लगे। बाज़ारों और सड़कों पर क्रूस बिकने लगे। लोग क्रूस को अपनी देह पर आभूषण की नाईं पहिनने लगे। घरों तथा प्रार्थना के स्थानों में क्रूस को बड़ा महत्व दिया जाने लगा। लोगों ने क्रूस के सामने झुकना और यहाँ तक कि उसकी उपासना करना आरम्भ कर दिया। और आज, हम देखते हैं, कि क्रूस को बहुतेरे लोगों के बीच एक बड़ी ही पवित्र वस्तु माना जाता है। लोग यह व्यक्त करने के लिये कि वे एक मसीही हैं क्रूस खरीदकर अपने गलों में पहिनते हैं! हां, यद्यपि उनके मन मसीह से कोसों दूर हों, और उनके जीवन मसीहीयत के नाम पर कलंक हों।

परन्तु, मित्रो, क्रूस वास्तव में क्या है? जैसा कि हमने देखा, क्रूस एक ऐसी वस्तु थी, एक ऐसा साधन और एक ज़रिया था जिसके ऊपर परमेश्वर ने अपने पुत्र को हमारे पापों के कारण बलिदान करवाकर हमारे उद्धार को सम्भव किया। सो क्रूस नहीं, परन्तु मसीह हमारे उद्धार का कारण है। वह हमारे बदले में कुर्बान हुआ, उसने हमारे पापों को धो डालने के लिये अपना लोहू बहाया, यद्यपि यह काम उसने क्रूस के ऊपर किया, किन्तु क्रूस केवल एक ज़रिया था। इसलिये हमें क्रूस को नहीं परन्तु मसीह को महत्व देना है जो उसके ऊपर मारा गया। हमें अपनी देह पर सोने, चांदी, और पीतल के क्रूस को नहीं, परन्तु अपने जीवनों में उस मसीह को स्थान देना है जिसने हमें बचाने के लिये क्रूस पर मृत्यु दण्ड सहा। हमें अपने घरों और प्रार्थना के स्थानों पर लकड़ी और पत्थर इत्यादि से बने क्रूस को नहीं, परन्तु उस मसीह यीशु

को ऊंचा उठाना चाहिए और उसी की आराधना करनी चाहिए जो क्रूस के ऊपर चढ़कर हमारे कारण श्रापित बना।

क्रूस के ऊपर चढ़कर मृत्यु के द्वारा मसीह ने अपना लोहू बहाया। और प्रेरितों २० : २८ में लिखा है कि उस लोहु से मसीह ने अपनी कलीसिया को मोल लिया; और मत्ती २६ : २८ में लिखा है कि मसीह ने अपना लोहू बहुतों के पापों की क्षमा के निमित्त बहाया। सो प्रत्यक्ष ही है, कि उद्धार प्राप्त करने के लिये हम मसीह के लोहू के सम्पर्क में आएं, जो बहुतों के पापों की क्षमा के निमित्त उसने क्रूस पर बहाया। और रोमियों ६ : ३, ४ पदों में प्रेरित पौलुस कहता है, कि "क्या तुम नहीं जानते, कि हम जितनों ने मसीह यीशु का बपतिस्मा लिया, तो उसकी मृत्यु का बपतिस्मा लिया ? सो उस मृत्यु का बपतिस्मा पाने से हम उसके साथ गाड़े गए, ताकि जैसे मसीह पिता कि महिमा के द्वारा मरे हुओं में से जिलाया गया, वैसे ही हम भी नए जीवन की सी चाल चलें।" अर्थात, जब मनुष्य यीशु की आज्ञानुसार बपतिस्मे के द्वारा जल के भीतर गाड़ा जाता है, तो जैसे यीशु अपनी मृत्यु पश्चात् कब्र के भीतर गाड़ा गया, वैसे ही बपतिस्मे के द्वारा, अर्थात जल-रूपी कब्र के भीतर गाड़े जाने के द्वारा, वह यीशु की मृत्यु की समानता में हो जाता है। और न केवल वह मसीह की मृत्यु का ही बपतिस्मा लेता है, परन्तु क्योंकि यीशु ने अपना लोहू अपनी मृत्यु में बहाया था, इस कारण वह उसकी मृत्यु की समानता में उसके साथ एक होकर, उसके उस लोहू के सम्पर्क में भी आ जाता है जो उसने जगत के पापों की क्षमा के निमित्त बहाया। यीशु मसीह में बपतिस्मा लेने के कारण मनुष्य मसीह की देह, अर्थात उसका कलीसिया का एक अंग बन जाता है, और क्रूस पर मसीह की मृत्यु के प्रभाव से उसका मेल परमेश्वर के साथ हो जाता है। पवित्र बाइबल का लेखक एक जगह कहता है, "क्योंकि वही हमारा मेल है, जिस ने दोनों को एक कर लिया : और अलग करनेवाली दीवार को जो बीच में थी ढा दिया। और अपने शरीर में बैर अर्थात वह व्यवस्था जिस की

आज्ञाएं विधियों की रीति पर थीं, मिटा दिया, कि दोनों से अपने में एक नया मनुष्य उत्पन्न करके मेल करा दे। और क्रूस पर बैर को नाश करके इस के द्वारा दोनों को एक देह बनाकर परमेश्वर से मिलाए।" (इफिसियों २:१४-१६)।

सो इस प्रकार हम देखते हैं कि क्रूस प्रभु यीशु के दुख तथा यातनाओं का एक चिन्ह है। क्रूस वह वस्तु है, जिसके ऊपर परमेश्वर ने मानवता के प्रति अपने प्रेम को प्रगट किया। क्रूस के ऊपर यीशु ने अपना बलिदान दिया, अपना लोहू बहाया, और क्रूस के ऊपर उसने बैर, अर्थात पाप को नाश किया। किन्तु, तौभी क्रूस नहीं, परन्तु मसीह हमारा उद्धारकर्त्ता है।

मित्रो, मेरी आशा है, कि आप इन बातों के ऊपर पूरी गम्भीरता के साथ विचार करेंगे। परमेश्वर अपने सत्य वचन को समझने और उस पर चलने के लिये आप सब को सामर्थ दे।

—:o:—

ऐसा बड़ा उद्धार

मित्रो:

यूं तो संसार में बहुतेरी ऐसी वस्तुएं हैं जो वास्तव में बहुत बड़ी हैं। बड़े-बड़े भवन और इमारतें हैं, जिनमें लोग रहना चाहते हैं। बड़ी-बड़ी डिग्रियां हैं, जिन्हें लोग प्राप्त करना चाहते हैं। बड़ी-बड़ी कुर्सियां और ओहदे हैं जिन्हें लोग पाना चाहते हैं। संसार में बड़ी-बड़ी योजनाएं हैं, बड़ी-बड़ी खोजें हैं, और बड़े-बड़े अविष्कार हैं। हम उनके बारे में सुनना चाहते हैं, हम उनके बारे में बातें करना चाहते हैं। परन्तु एक ऐसी वस्तु है जो इन सब वस्तुओं से विशाल है और इन सब वस्तुओं में अत्यन्त ही बड़ी है, किन्तु अक्सर हम उसे बड़ा ही छोटा समझते हैं और उसकी ओर कोई ध्यान नहीं देते। उस वस्तु को पवित्र बाइबल "ऐसा बड़ा उद्धार" कहकर प्रगट करती है। बाइबल में इब्रानियों नाम की पुस्तक के दूसरे अध्याय के आरम्भ में हम इस प्रकार पढ़ते हैं, "इस कारण चाहिए, कि हम उन बातों पर जो हमने सुनी हैं, और भी मन लगाएं, ऐसा न हो कि बहककर उन से दूर चले जाएं। क्योंकि जो वचन स्वर्गदूतों के द्वारा कहा गया था। जब वह स्थिर रहा और हर एक अपराध और आज्ञा न मानने का ठीक-ठीक बदला मिला। तो हम लोग ऐसे बड़े उद्धार से निश्चिन्त रहकर क्योंकर बच सकते हैं? जिसकी चर्चा पहिले-पहल प्रभु के द्वारा हुई और सुननेवालों के द्वारा हमें निश्चय हुआ।" (इब्रानियों २ : १-३)।

उद्धार मनुष्य की एक मुख्य आवश्यकता है। मनुष्य को उद्धार की आवयश्कता है क्योंकि मनुष्य पापी है। जिस प्रकार मनुष्य को जीवित

रहने के लिये भोजन की आवश्यकता है, उसी प्रकार अपने पापों से छुटकारा पाने के लिये उसे उद्धार की आवश्यकता है। परमेश्वर मनुष्य का उद्धार करना चाहता है और उसने उसे उद्धार का मार्ग भी दिया है। प्रभु यीशु ने उस उद्धार का प्रचार सारे जगत में करने की आज्ञा दी। और जिन लोगों ने परमेश्वर के उद्धार के काम को अपनी आंखों से देखा या उसके बारे में सुना उन्होंने अपनी गवाही को बाइबल की पुस्तकों में लिख दिया, ताकि उन के बाद पढ़नेवाले उसमें विश्वास लाकर उद्धार पाएं। परन्तु, लेखक कहता है, कि फिर "हम लोग ऐसे बड़े उद्धार से निश्चिन्त रहकर क्योंकर बच सकते हैं?" सो इस समय हम विशेष रूप से इस बात पर विचार करेंगे, कि हमारा उद्धार इतना बड़ा क्यों है?

(१) सबसे पहिले, हमारा उद्धार बड़ा इसलिये है, क्योंकि इसे सम्भव करने के लिये परमेश्वर को एक बहुत बड़ा बलिदान करना पड़ा। यदि मनुष्य किसी के लिये कोई बलिदान करता है, तो वह अपने प्रेम को उसके प्रति प्रगट करता है। अर्थात बलिदान के लिये प्रेम की आवश्यकता होती है। यदि कोई मनुष्य अपने देश के लिये कोई बलिदान करता है, तो उस बलिदान को करने के लिये उसे प्रेम से ही प्रेरणा मिलती है, अर्थात जो मनुष्य अपने देश से प्रेम नहीं रखता वह उसके लिये कोई बलिदान नहीं करेगा। और जितना बड़ा प्रेम होगा उतना ही बड़ा बलिदान होगा। पवित्र बाइबल में लिखा है, "परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उस ने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए। (यूहन्ना ३ : १६)। और फिर लिखा है, कि, "परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रगट करता है, कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिये मरा।" (रोमियों ५ : ८)। "प्रेम इस में नहीं," बाइबल का लेखक कहता है, "कि हम ने परमेश्वर से प्रेम

किया; पर इस में है, कि उस ने हम से प्रेम किया; और हमारे पापों के प्रायश्चित के लिये अपने पुत्र को भेजा।" (१ यूहन्ना ४ : १०)।

मान लीजिए, आपके गांव या शहर में कोई मनुष्य बहुतेरे अपराधों के दोष में पकड़ा जाता है। और उसे मौत की सज़ा सुनाई जाती है। और उसके छुटकारे के लिये केवल एक ही शर्त रखी जाती है, कि यदि कोई अच्छा मनुष्य उसकी सज़ा को अपने ऊपर ले ले तो वह छूट सकता है। अब मान लीजिए आपके पास एक पुत्र है, क्या आप उस अपराधी के छुटकारे के लिये अपने पुत्र को दे देंगे ?

मित्रो, जबकि बाइबल कहती है, कि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपने एकलौते पुत्र को दे दिया, तो इसका ठीक यही अभिप्राय है। जब हम अपराधी, पापी और अधर्मी थे; जब हम पाप और अधर्म में नाश होने के लिये ठहराए गए थे, तो परमेश्वर ने हम से ऐसा प्रेम रखा, इतना बड़ा प्रेम रखा, कि हमारे छुटकारे के लिये उसने स्वर्ग से अपने पुत्र को नाश होने के लिये भेज दिया, ताकि वह हमारे पापों के बदले में मरे और हमारे पापों का प्रायश्चित करे। सो हमारा उद्धार, हम देखते हैं, वास्तव में बहुत बड़ा है, क्योंकि परमेश्वर को उसके लिये अपने पुत्र को देना पड़ा।

(२) फिर हम देखते हैं, कि हमारा उद्धार इसलिये भी ऐसा बड़ा है क्योंकि उसके लिये एक बहुत बड़ा दाम दिया गया। कोई भी वस्तु उतनी ही प्रिय और महत्वपूर्ण होती है जितना बड़ा उसका दाम होत है। परमेश्वर का वचन कहता है, "तुम्हारा छुटकारा चांदी और सोने अर्थात नाशमान वस्तुओं के द्वारा नहीं हुआ। पर निर्दोष और निष्कलंक मेम्ने अर्थात मसीह के बहुमूल्य लोहू के द्वारा हुआ।" (१ पतरस १: १८-१९)। लोहू वास्तव में बड़ी ही कीमती वस्तु है। लोहू मनुष्य का जीवन है। किन्तु जबकि मनुष्य का लोहू इतना महत्वपूर्ण है, तो फिर परमेश्वर का लोहू कितना अधिक मूल्यवान होगा ! मसीह परमेश्वर

का पुत्र था। उसने परमेश्वर की इच्छा से पृथ्वी पर जन्म लिया। वह परमेश्वर की सामर्थ के द्वारा एक स्त्री से उत्पन्न हुआ। इसलिये उसका लोहू परमेश्वर का लोहू था। और इस कारण जब मसीह ने जगत के पापों के प्रायश्चित के लिये क्रूस के ऊपर से अपना लोहू बहाया, तो परमेश्वर ने मसीह में होकर अपना ही लोहू बहाया। मसीह का लोहू किसी मनुष्य का लोहू नहीं था, परन्तु वह परमेश्वर के एकलौते पुत्र का लोहू था, जिसने एक निर्दोष और निष्कलंक मेम्ने के समान अपने आप को हमारे छुटकारे के लिये बलिदान कर दिया। सो जबकि परमेश्वर के एकलौते पुत्र मसीह का लोहू हमारे छुटकारे के लिये बहाया गया, तो मित्रो, हमारा उद्धार वास्तव में बहुत बड़ा है।

(३) फिर, तीसरे स्थान पर हम देखते हैं, कि हमारा उद्धार इस दृष्टिकोण से भी बहुत बड़ा है क्योंकि इसका सम्बन्ध एक बड़ी ही महत्व-पूर्ण वस्तु से है। एक जगह प्रभु यीशु ने कहा, कि, "यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे, और अपने प्राण की हानि उठाए, तो उसे क्या लाभ होगा? या मनुष्य अपने प्राण के बदले में क्या देगा?" (मत्ती १६ : २६)। यहां प्राण से प्रभु का अभिप्राय मनुष्य की आत्मा से है। अकसर मनुष्य जगत की वस्तुओं को प्राप्त करने में लगा रहता है। उसे इसकी कोई चिन्ता नहीं रहती कि वह पाप के कारण दोषी और अपराधी है, और यदि वह पाप में ही मर जाए तो वह हमेशा के लिये नाश होगा। वह कभी अपनी आत्मा के उद्धार के बारे में नहीं सोचता। और इसका कारण यह है, कि वह अपनी आत्मा के महत्व को नहीं पहिचानता। परन्तु परमेश्वर, जिसने मनुष्य को अपने आत्मिक स्वरूप पर उत्पन्न किया है, मनुष्य की आत्मा की कीमत को पहिचानता है। इसी कारण, उसे बचाने के लिये उसने इतना बड़ा बलिदान दिया और इतनी बड़ी कीमत चुकाई। तो क्या फिर इतने बड़े उद्धार से निश्चिन्त रहकर भी हम बच सकते हैं?

मित्रो, उद्धार एक बड़ा ही गम्भीर विषय है। यह कोई ऐसा विषय नहीं है जिसके बारे में हम निश्चिन्त हो जाएं। यह जीवन और मृत्यु का विषय है; यह अनन्त जीवन और अनन्त मृत्यु का विषय है। और जबकि परमेश्वर ने हमारे उद्धार के लिये इतना बड़ा काम किया है, तो हम इस बारे में निश्चिन्त न रहें। परमेश्वर चाहता है कि हर एक मनुष्य उसके पुत्र मसीह में विश्वास लाए, और अपने पापों से मन फिराकर पापों की क्षमा के लिये उसकी आज्ञानुसार बपतिस्मा ले। (इब्रानियों ५ : ८,९; मरकुस १६ : १६)।

मेरी आशा है, कि आप इस विषय में गम्भीरता के साथ विचार करेंगे और परमेश्वर की आज्ञाओं को मानकर उस उद्धार को प्राप्त करेंगे जो जगत की सारी वस्तुओं से मूल्यवान है।

—: o :—

"धोखा न खाओ"

मित्रो :

आपने अकसर "खबरदार" या "चेतावनी" शब्द को कहीं न कहीं अवश्य लिखा देखा होगा। जब कभी भी हम कहीं खबरदार या चेतावनी लिखा हुआ पढ़ते हैं तो हम बड़े ही सतर्क और सावधान हो जाते हैं। हम में से बहुतेरों ने रात को चौकीदार को भी बार-बार "खबरदार" कहते सुना होगा। यह शब्द हमारा ध्यान सावधानी की ओर दिलाता है, ताकि हम सतर्क रहें और किसी प्रकार के खतरे में न पड़ें। इसी प्रकार पवित्र बाइबल का लेखक एक जगह कहता है, "धोखा न खाओ!" (गलतियों ६ : ७)। परन्तु धोखा हम में से प्रत्येक मनुष्य कभी न कभी खा ही जाता है। कभी-कभी हम किसी स्थान पर पहुंचने के लिये एक रास्ते पर चलने लगते हैं, परन्तु बहुत दूर निकलने के बाद हमें पता चलता है कि हम वास्तव में गलत रास्ते पर चल रहे हैं। कभी-कभी हम किसी बात को सच मान लेते हैं, किन्तु बहुत समय पश्चात हम पर यह प्रगट होता है कि जिस बात को हम एक लम्बे समय से सच मानते आ रहे थे। वास्तव में वह गलत थी। अकसर लोगों के साथ ऐसा भी होता है कि वे किसी वस्तु को असली समझकर बड़े चाव से उसे मोल ले लेते हैं, परन्तु उन्हें बड़ा ही आश्चर्य होता है जब कुछ ही देर बाद उन्हें पता चलता है कि वास्तव में वे धोखे में आ गए।

जी हां, धोखा यों तो हम में से हर एक मनुष्य कभी न कभी खा ही जाता है, परन्तु कभी-कभी धोखा बड़ा ही मंहगा पड़ता है। कुछ ही दिन हुए जबकि मैंने अखबार में इसी प्रकार के धोखे की एक घटना के बारे में यूं पढ़ा था : किसी महिला ने साधू कहलानेवाले एक मनुष्य को अपने सोने के ज़ेवर एक पोटली में बांधकर इस लालच में दे दिए कि वह उन्हें दुगना करके लौटा देगा। कुछ ही देर बाद वह साधू ज़ेवरों के वज़न से दुगने वज़न की पोटली उस महिला को थमाकर चला गया। वह महिला वज़न का अनुभव करके बड़ी ही खुश हुई, और पूरी उतावली के साथ उसने उस पोटली को खोलना आरम्भ किया। परन्तु उसके आश्चर्य और शोक का ठिकाना न रहा जब उसने देखा कि पोटली में ज़ेवरों के स्थान पर पत्थर धरे हैं! यद्यपि इस प्रकार का धोखा बहुत बड़ा है, परन्तु मित्रो सबसे बड़ा धोखा मनुष्य के लिये वह धोखा है जिसका परिणाम नरक की भयंकर ज्वाला है और जिसका शोक युगानुयुग कभी समाप्त न होगा। और वह धोखा है, आत्मिक धोखा।

प्रभु यीशु जब इस पृथ्वी पर था तो उसने इस भयंकर धोखे से चौकस रहने के सम्बन्ध में अनेको शिक्षाएं दीं। एक जगह उसने कहा, "चौकस रहो, और हर प्रकार के लोभ से अपने आप को बचाए रखो : क्योंकि किसी का जीवन उस की सम्पत्ति की बहुतायत से नहीं होता।" (लूका १२:१५)। और फिर यीशु ने एक दृष्टान्त देकर कहा, कि एक मनुष्य बड़ा ही धनवान था, और उसे अपने धन-सम्पत्ति पर बड़ा ही गर्व तथा भरोसा था, और यहां तक कि वह कहता था कि मुझे भविष्य के लिये अब कोई चिन्ता नहीं। "परन्तु परमेश्वर ने उस से कहा; हे मूर्ख, इसी रात तेरा प्राण तुझ से ले लिया जाएगा : तब जो कुछ तूने इकट्ठा किया है, वह किसका होगा?" (लूका १२:२०)। यहां हम देखते हैं, कि इस मनुष्य ने धन के धोखे में आकर अपने प्राणों को गंवा दिया। वह सोचता था कि उसके पास सब कुछ है; परन्तु

परमेश्वर ने उससे कहा कि तू मूर्ख है, क्योंकि वास्तव में उसके पास कुछ भी न था। वह उद्धार के बिना मुक्ति-रहित था। जीवन में उसके पास अवसर था कि वह परमेश्वर के अनुग्रह वा उद्धार को स्वीकार करके मुक्ति पा ले। परन्तु उसका ध्यान अपनी आत्मा की ओर बिल्कुल भी न गया, वह केवल अपने शरीर के लिये ही धन बटोरता रहा। मित्रो, वह मनुष्य आज हम में से अनेको लोगों की तरह झूठ को सच समझ बैठा, नकली को असली मान बैठा, और परिणाम स्वरूप उसे अपनी ही आत्मा को हमेशा के लिये खोना पड़ा।

फिर, एक अन्य स्थान पर प्रभु ने कहा, कि न्याय के दिन "बहुतेरे मुझ से कहेंगे; हे प्रभु, हे प्रभु, क्या हमने तेरे नाम से भविष्यद्वाणी नहीं की, और तेरे नाम से दुष्टात्माओं को नहीं निकाला, और तेरे नाम से बहुत अचम्भे के काम नहीं किए?" सो प्रभु हमारा उद्धार कर, हमें अनन्त जीवन दे, हमारे लिये स्वर्ग के राज्य का द्वार खोल दे। परन्तु प्रभु ने कहा, "तब मैं उन से खुलकर कह दूंगा कि मैंने तुमको कभी नहीं जाना है कुकर्म करनेवालों, मेरे पास से चले जाओ।" (मत्ती ७:२२, २३)। क्योंकि "जो मुझ से हे प्रभु, हे प्रभु कहता है, उन में से हर एक स्वर्ग के राज्य में प्रवेश न करेगा, परन्तु वही जो मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चलता है।" (मत्ती ७:२१)। यहां हम देखते हैं, कि ये सभी लोग जीवन भर अपने आप को धर्मी समझते रहे, प्रभु का अनुयायी मानते रहे, परन्तु अंतिम दिन जब नतीजा खुला तो उन्हें पता चला कि वे जीवन भर एक बड़े भारी धोखे में फंसे थे। क्योंकि जिन कामों को वे धर्म के काम समझकर करते रहे, प्रभु ने कहा कि वे वास्तव में कुकर्म के काम थे, व्यर्थ काम थे, क्योंकि वे उसकी इच्छा के अनुआर न थे। वे लोग अपनी बुद्धि वा समझ के अनुसार धर्म के काम कर रहे थे, वे उन कामों को निश्चय ही प्रभु के नाम से कर रहे थे, परन्तु वे सभी काम उनकी अपनी ही इच्छा तथा बुद्धि के अनुसार थे; वे सब काम

मनुष्यों के धर्मोपदेश और मनुष्यों की बनाई विधियों तथा शिक्षाओं के अनुसार थे। (मत्ती १५:८, ९)। वे परमेश्वर की इच्छा के अनुसार न थे। जी हां वे अपने आप को धर्मी समझते थे, जैसे कि आज बहुत से लोग अपने आप को समझते हैं, परन्तु वे धोखे में थे।

परन्तु प्रभु यीशु ने ये दृष्टान्त क्यों दिए? इसलिये, ताकि हम अपने जीवनों में उनकी गलतियों से शिक्षा पाएं, ताकि हम उन लोगों की तरह धोखे में न रहें। किंतु, क्या हम सीख रहे हैं? क्या हम सुन रहे हैं? कहां हैं आज हम आत्मिक दृष्टिकोण से? क्या हम सोचते हैं कि न्याय के दिन प्रभु हमें अपने राज्य में स्वीकार करेगा? या क्या हम उस मंडली के बीच में होंगे जिन से वह कहेगा, कि मेरे सामने से दूर हो जाओ क्योंकि तुम ने परमेश्वर की इच्छानुसार नहीं परन्तु मनुष्यों के धर्मोपदेश और मनुष्यों की बनाई विधियों वा शिक्षाओं के अनुसार अपने धर्म के काम किए?

क्या आप उन लोगों में से हैं, जो बाइबल को अपने घर में रखने के कारण ही स्वर्ग में प्रवेश पाना चाहते हैं? यदि हां, तो आप धोखे में हैं! बाइबल परमेश्वर का वचन है, परन्तु घर में रखी बाइबल एक पुस्तक के समान है। परमेश्वर ने अपना वचन हमें इसलिये दिया है ताकि हम उसे पढ़ें, उसे मानें और उस पर चलें। बहुतेरे लोग सोचते हैं कि वे स्वर्ग में अवश्य ही जाएंगे, क्योंकि वे गले में एक क्रूस लटकाकर चलते हैं या सुबह-शाम प्रभु से प्रार्थना करते हैं। परन्तु प्रभु कहता है कि वे धोखे में हैं। उसने कहा, कि तुम मुझे प्रभु, प्रभु क्यों कहते हो जबकि तुम मेरा कहना नहीं मानते। (लूका ६:४६)। आम तौर से देखने में आता है, कि जब किसी मसीही या "ईसाई" कहलानेवाले परिवार में एक बालक का जन्म होता है, तो उसके माता-पिता उस नन्हें बालक को किसी चर्च में ले जाकर बपतिस्मे के नाम पर उसके ऊपर जल का छिड़काव करवाते हैं। जब वह बालक बड़ा हो जाता है तो उसे दृढ़ीकरण या मुस्तकीम

करवाया जाता है। आगे चलकर वह कभी-कभी चर्च जाने लगता है, और साल में एक-दो बार नए कपड़े पहिनकर त्योहार मना लेता है। उसे लोग "ईसाई" कहते हैं और वह अपने आपको एक मसीही समझता है और सोचता है कि मैं अवश्य ही उद्धार पाऊंगा और प्रभु के राज्य में प्रवेश करूंगा। मित्रो, क्या आप सुन रहे हैं? सुनिए, इस से बड़ा धोखा और कोई नहीं हो सकता, क्योंकि अभी जितनी भी बातों का वर्णन मैंने आपके सामने किया ये सब परमेश्वर की आज्ञाएं नहीं परन्तु मनुष्यों के बनाए धर्मोपदेश हैं। ये सब मनुष्यों की बनाई शिक्षाएं, रीतियां और विधियां हैं, और यदि आप इस प्रकार की बातों को मान रहे हैं, तो आप सचमुच धोखे में हैं। जी हां, आप बहुत बड़े धोखे में हैं!

मित्रो, उद्धार पाने और अनन्त जीवन में प्रवेश करने का केवल एक ही मार्ग है, और वह है परमेश्वर का पुत्र यीशु! उसने कहा, "मार्ग और सच्चाई और जीवन मैं ही हूं; बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुंच सकता।" (यूहन्ना १४:६)। क्या आप उसमें विश्वास करते हैं? क्या आपके धर्म के काम उसकी शिक्षानुसार हैं? मित्रो, धोखा न खाओ! अभी भी समय है। परमेश्वर ने हम सब को अपना एक ही वचन दिया है, और एक दिन वह हम सब का लेखा उसी वचन के अनुसार लेगा।

यदि इन बातों के सम्बन्ध में आप और अधिक जानना या पूछना चाहते हैं तो मैं आपकी सेवा में हूं।

—०—

विश्वास, एक विशाल और महत्वपूर्ण सिद्धांत

मित्रो :

मनुष्य यद्यपि बहुतेरी बातों का ज्ञान रखता है, परन्तु तौभी हमारा ज्ञान सीमित है। मेरे कहने का अभिप्राय यह है कि यद्यपि आज हम बहुतेरी बातों के बारे में जानते हैं, परन्तु फिर भी कुछ बातें ऐसी हैं जिन्हें हम केवल विश्वास से ही स्वीकार करते हैं। जैसे कि हम जानते हैं, कि भोजन हमारे शरीर के लिये आवश्यक है, परन्तु हम नहीं जानते कि भोजन किस प्रकार हमारे शरीर में जाकर अपना काम करता है और हमें ताकत देता है। फिर, जब हम कभी बीमार पड़ते हैं, तो हम दवाई लेते हैं, वह दवाई हमें चंगाई देती है, परन्तु हम नहीं जानते कि वह दवाई किस प्रकार अपना काम हमारे शरीर के भीतर करती है। इसी प्रकार, मनुष्य-जन्म लेता है, हम जानते हैं कि मनुष्य जन्म लेता है, परन्तु हम यह नहीं जानतें कि किस प्रकार बालक माता के पेट में बनता और बढ़ता है। अर्थात इन बातों को न समझते हुए भी हम इन्हें स्वीकार करते हैं। हम इन्हें वास्तविकता जानकर स्वीकार करते हैं—और हम इन सबको विश्वास से स्वीकार करते हैं।

सो हम देखते हैं, कि विश्वास एक बड़ा ही महत्वपूर्ण सिद्धांत हैं। और यह सिद्धांत न केवल भौतिक परन्तु आत्मिक दृष्टिकोण से भी बड़ा ही महत्वपूर्ण है। जैसे कि हम में से किसी ने भी कभी भी परमेश्वर को अपनी आंखों से नहीं देखा, परन्तु तौभी हम मानते हैं और हमारा

विश्वास है कि परमेश्वर है। मैं आपको देख सकता हूं, परन्तु मैं आपकी आत्मा को नहीं देख सकता, किन्तु तौभी मेरा विश्वास है कि आपके पास आत्मा है, ठीक ऐसे ही जैसे कि मैं आपके दिमाग़ को नहीं देख सकता परन्तु तौभी मैं जानता हूं कि आपके पास दिमाग है और मैं ऐसा विश्वास से मानता हूं।

सो यद्यपि जबकि हम बहुतेरी बातों को विश्वास से मान लेते हैं, तौभी जब बात परमेश्वर की आज्ञाओं को मानने पर आती है तो हम में से बहुतेरों के विश्वास को ठोकर लगती है। अर्थात परमेश्वर की कुछ आज्ञाएं हमारे लिये ठोकर का कारण बन जाती हैं, क्योंकि उन्हें विश्वास से स्वीकार करने के विपरीत हम उनके कारण जानना चाहते हैं, हम उनके बारे में प्रश्न करते हैं, और उन्हें अपने ज्ञान से समझना चाहते हैं। प्रेरित पौलुस जब यीशु के क्रूस की कथा का प्रचार किया करता था, तो बहुतेरे लोग उसे मूर्खता की बातें समझकर उसका हंसी वा ठट्ठा उड़ाते थे। वे उसे स्वीकार करने के लिये प्रमाण चाहते थे, वे उसे अपने ज्ञान वा तर्क के अनुसार समझना चाहते थे। सो बाइबल में एक जगह लिखकर वह कहता है :

"क्योंकि क्रूस की कथा नाश होनेवालों के निकट मूर्खता है, परन्तु हम उद्धार पानेवालों के निकट परमेश्वर की सामर्थ है। क्योंकि लिखा है कि मैं ज्ञानवानों के ज्ञान को नाश करूंगा, और समझदारों की समझ को तुच्छ कर दूंगा। कहां रहा ज्ञानवान ? कहां रहा शास्त्री ? कहां रहा इस संसार का विवादी ? क्या परमेश्वर ने संसार के ज्ञान को मूर्खता नहीं ठहराया ? क्योंकि जब परमेश्वर के ज्ञान के अनुसार संसार ने ज्ञान से परमेश्वर को न जाना तो परमेश्वर को यह अच्छा लगा, कि इस प्रचार की मूर्खता के द्वारा विश्वास करनेवालों को उद्धार दे। यहूदी तो चिन्ह चाहते हैं और यूनानी ज्ञान की खोज में हैं। परन्तु हम तो उस क्रूस पर चढ़ाए हुए मसीह का प्रचार करते हैं जो यहूदियों

के निकट ठोकर का कारण और अन्यजातियों के निकट मूर्खता है।" (१ कुरिन्थियों १:१८-२३)। यहां हम देखते हैं, कि मसीह का क्रूस यहूदियों के निकट ठोकर का कारण था क्योंकि वे क्रूस पर हुए मसीह के बलिदान पर विश्वास न लाकर अपनी व्यवस्था के कामों को करके उद्धार पाना चाहते थे। और दूसरी ओर हम देखते हैं, कि अन्य जातियों के निकट मसीह के क्रूस की कथा मूर्खता की बात थी, क्योंकि वे उसे विश्वास से नहीं परन्तु तर्क और अपने ज्ञान से परखकर देखना चाहते थे।

और यही बात आज भी है। जबकि कुछ लोगों के निकट मसीह के क्रूस की कथा ठोकर का कारण है, तो कुछ के लिये यह मूर्खता की बात है। जबकि कुछ लोग क्रूस पर मसीह के बलिदान की विश्वास से अपने ही पापों का प्रायश्चित न मानकर खुद ही अपने पापों का प्रायश्चित करने में लगे हुए हैं, तो कुछ इसे मूर्खता की बात कहकर अस्वीकार कर देते हैं।

बहुतेरे लोग मुझ से पूछते हैं, कि आप बार-बार कहते हैं कि यीशु मसीह ने कहा, कि जो विश्वास करेगा और बपतिस्मा लेगा उसी का उद्धार होगा, (मरकुस १६ : १६), परन्तु बपतिस्मे के द्वारा मनुष्य का उद्धार कैसे हो सकता है? वे मसीह में विश्वास करते हैं; उसके क्रूस की कथा में विश्वास करते हैं, परन्तु उसकी आज्ञा में विश्वास नहीं करते! वे तर्क और ज्ञान के द्वारा जानना चाहते हैं कि बपतिस्मे के द्वारा मनुष्य का उद्धार कैसे हो सकता है? परन्तु मैं इसका उत्तर नहीं दे सकता। क्योंकि मैं स्वयं नहीं जानता, जैसे कि मैं बहुतेरी अन्य बातों के बारे में नहीं जानता, कि बपतिस्मे के द्वारा हमारा उद्धार कैसे होता है। परन्तु मैं विश्वास करता हूं कि उद्धार पाने के लिये बपतिस्मा लेना आवश्यक है. क्योंकि प्रभु ने आज्ञा देकर कहा है, कि जो उसमें विश्वास करेगा। और बपतिस्मा लेगा उसी का उद्धार होगा। मै केवल इतना

जानता हूं, कि मनुष्य का उद्धार यीशु के सुसमाचार को मानने के द्वारा होता है। (२ थिस्सलुनीकियों १ : ७-९)। और यीशु का सुसमाचार यह है कि पवित्रशास्त्र के अनुसार वह हमारे पापों के लिये मारा गया और गाड़ा गया और पवित्र शास्त्र के वचन के अनुसार तीसरे दिन मुर्दों में से जी भी उठा। (१ कुरिन्थियों १५ : १-४)। और इसलिये जब मनुष्य अपना मन फिराकर पाप के लिये मर जाता है, और बपतिस्मा लेने के द्वारा पानी की कब्र के भीतर गाड़ा जाता है और उसमें से बाहर आता है तो इस प्रकार वह मसीह के सुसमाचार को मानता है और यूं उसका उद्धार होता है। (रोमियों ६ : १७)। पवित्र बाइबल का लेखक कहता है, "क्या तुम नहीं जानते, कि हम जितनों ने मसीह यीशु का बपतिस्मा लिया, तो उसकी मृत्यु का बपतिस्मा लिया ? सो उस मृत्यु का बपतिस्मा पाने से हम उसके साथ गाड़े गए, ताकि जैसे मसीह पिता की महिमा के द्वारा मरे हुओं में से जिलाया गया, वैसे हम भी नए जीवन की सी चाल चलें। क्योंकि यदि हम उसकी मृत्यु की समानता में उसके साथ जुट गए हैं, तो निश्चय उसके जी उठने की समानता में जुट जाएंगे। क्योंकि हम जानते हैं, कि हमारा पुराना मनुष्यत्व उसके साथ क्रूस पर चढ़ाया गया, ताकि पाप का शरीर व्यर्थ हो जाए, ताकि हम आगे को पाप के दासत्व में न रहें।" (रोमियों ६:३-६)।

सो मित्रो, जिस प्रकार हम परमेश्वर में विश्वास रखते हैं उसी प्रकार हमें उसके वचन पर भी विश्वास रखना चाहिए। हम परमेश्वर के वचन को तुच्छ समझकर परमेश्वर का अनुसरण नहीं कर सकते। और यदि हम उसके वचन पर विश्वास करते हैं, तो हमें चाहिए कि हम उसके वचन को मानें। क्योंकि यदि हम उसकी आज्ञाओं को नहीं मानते तो हमारा विश्वास व्यर्थ है। हमें न "केवल विश्वास" की आवश्यकता है; परन्तु हमें एक ऐसे विश्वास की आवश्यकता है जो न

परमेश्वर की आज्ञाओं के कारण ठोकर खाए और न उसकी किसी आज्ञा को मूर्खता की बात जाने। बाइबल में एक जगह लिखा है, कि विश्वास सुनने से और सुनना प्रभु के वचन से होता है। (रोमियों १० : १७)। इसलिये मेरी आशा है कि आज प्रभु के वचन से जो कुछ भी आपने सुना है उस पर आप विश्वास करेंगे। प्रभु आपको आशीष दें।

—०—

परमेश्वर किस के समान है ?

मित्रो :

क्या कभी आपने इस बात पर विचार किया, कि परमेश्वर किस के समान है ? हम सब उसके बारे में सुनते हैं, उसके विषय में बातें करते हैं, हम उसके बारे में पढ़ते हैं, और उस से प्रार्थना करते हैं। परन्तु वह कौन है ? अक्सर कुछ वस्तुएं ऐसी होती हैं जिनके अर्थ को किसी अन्य वस्तु से तुलना करके ही समझा जा सकता है। प्रभु यीशु ने अपने प्रचार-काल में इसी प्रकार की तुलनात्मक शिक्षा के द्वारा अपने सुननेवालों के ऊपर बहुतेरी महत्वपूर्ण बातों के अर्थ को स्पष्ट किया। एक बार जब वह अपने सुननेवालों को स्वर्ग के राज्य के महत्व को समझा रहा था तो उसने कहा, कि स्वर्ग का राज्य एक बहूमूल्य मोती के समान है, जो एक बार जब एक व्योपारी को मिल गया तो उसने अपना सब कुछ बेचकर उसे मोल ले लिया। फिर इसी प्रकार एक बार जब वह परमेश्वर की आज्ञाओं को मानने के महत्व को समझा रहा था, तो उसने कहा, कि जो मनुष्य मेरी बातों को सुनकर उन्हें मानता है, वह उस बुद्धिमान मनुष्य के समान है जिसने अपना घर चट्टान पर बनाया। परन्तु जो मनुष्य मेरी बातों को सुनकर उन्हें नहीं मानता वह उस मूर्ख मनुष्य के समान है, जिसने अपना घर बालू रेत पर बनाया। क्योंकि जब तूफ़ान आया और बाढ़ आई और मेंह बरसा और उन दोनों घरों पर टक्करें लगीं, तो बालू रेत के ऊपर बना हुआ घर एक-दम गिरकर सत्यानाश हो गया, किन्तु जो घर चट्टान पर बना था वह दृढ़ता से खड़ा रहा।

सो इस तरह हम देखते हैं, कि जब किसी वस्तु के महत्व या अर्थ को हम ठीक से नहीं समझ पाते, तो यदि हम उसकी तुलना किसी अन्य समान वस्तु से करें, जिसमें वैसी ही विशेषताएं हों, तो हमें उसे समझने में आसानी होती है। सो परमेश्वर किस के समान है ? कुछ समय पूर्व जब मैं एक जगह बाइबल क्लास ले रहा था, तो एक नौ-जवान ने बड़े तैश में आकर कहा, कि परमेश्वर तो एक डिक्टेटर है, क्योंकि वह चाहता है कि जो भी उसकी इच्छा हो और जो कुछ भी वह कहे हम केवल वही करें ! उस नौजवान से मैंने कहा, कि मेरे मित्र, पहिली बात तो यह है कि परमेश्वर यदि वास्तव में एक डिक्टेटर होता तो अब तक आप की हड्डियां तक भी चूना बन चुकी होतीं। क्योंकि एक डिक्टेटर वह होता है, जिसकी आज्ञा पर यदि अमल न किया जाए तो तत्काल दन्ड मिलता है। परन्तु आप तो निरन्तर उसकी आज्ञाओं के विरोध में अपना जीवन बिता रहे हैं और प्रतिदिन न जाने कितने पाप करते हैं। तौभी वह आपको दन्ड देने के विपरीत आपके ऊपर अपनी आशीष की बारिश बरसा रहा है। उसने आप को जीवन दिया है और जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये नाना-प्रकार के साधन प्रदान किए हैं। आप उसकी उपज खाते हैं और उसके प्रकाश में चलते-फिरते हैं। किन्तु यदि वह एक डिक्टेटर होता तो आप, और निसंदेह, सारा जगत अब तक कभी का नाश हो चुका होता।

परन्तु सच्चाई यह है, कि परमेश्वर वास्तव में एक प्रेमी पिता के समान है, जो धीरज से इस बात की बाट जोहता है कि हम अभी भी अपना मन फिराकर उसके पास वापस लौट आएं। क्योंकि वह नहीं चाहता कि हम में से कोई भी नाश हो, परन्तु यह कि हम सब को मन फिराव का अवसर मिले। (२ पतरस ३ : ९)। लेकिन फिर मैंने उस नौजवान से, जो कह रहा था कि परमेश्वर एक डिक्टेटर के समान है, पूछा कि क्या कभी आप के पिता ने आपको अपनी आज्ञा न मानने के

कारण डांटा या कोई ताड़ना दी ? उसने कहा, हां, ऐसा तो कई बार हुआ है। सो मैंने उस से कहा, कि जबकि हमारे शारीरिक पिता हम से ऐसी आशा रखते हैं कि हम उनकी आज्ञा मानें, तो क्या ऐसी ही आशा हमारा स्वर्गीय पिता हम से नहीं रख सकता ? और यदि वे जो शारीरिक भाव से हमारे पिता हैं अपनी आज्ञा न माने जाने के कारण हमें दन्ड देते हैं, तो क्या हमारे स्वर्गीय पिता को अधिकार नहीं कि यदि हम उसकी आज्ञा न मानें तो वह हमें दन्ड दे ? वे जो शारीरिक भाव से हमारे पिता हैं, हमारी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिये परिश्रम करते हैं, वे हमारी देख-भाल करते हैं, क्योंकि वे हमसे प्रेम करते हैं। इसी प्रकार परमेश्वर भी हमें सब कुछ देता है और हमारी रक्षा करता है, क्योंकि वह हम से प्रेम करता है। हमारे शारीरिक पिता हमें कभी-कभी डांटते भी हैं, दन्ड भी देते हैं। इसलिये नहीं कि वे हमारे बैरी हैं या वे हम से जलते और हम से नफ़रत करते हैं, परन्तु इसलिये ताकि हम भविष्य में अच्छे बनें और अपने जीवनों को खराब न कर लें। इसी प्रकार हमारा परमेश्वर भी हमें सुधारने के लिये हमें दन्ड और ताड़ना देता हैं, क्योंकि वह हम से प्रेम करता है, क्योंकि वह नहीं चाहता कि हम नाश हों।

सो वास्तव में, हम देखते हैं कि परमेश्वर एक पिता के समान है। परन्तु इस से मेरा यह अभिप्राय कदापि नहीं है, कि यदि किसी का पिता पियक्कड़ या जुआरी हो और अपने बच्चों का ख्याल न रखता हो और उन्हें व्यर्थ मारता-पीटता हो, तो वह इस प्रकार का एक पिता है। न ही मेरा अभिप्राय एक इस प्रकार के पिता से है जो कभी भी अपने बालक को न धमकाता हो, न डांटता हो, परन्तु केवल प्रेम ही करता हो और उसकी हर एक इच्छा को उसकी मर्ज़ी के अनुसार पूरी कर देता हो। परन्तु परमेश्वर एक ऐसे पिता के समान है जो हमसे निःस्वार्थ प्रेम करता है। वह हमारे अपराधों को क्षमा करते नहीं थकता। वह हमारी प्रत्येक इच्छा को तो नहीं, किन्तु हमारी हर एक आवश्यकता

को अवश्य पूरा करता है, क्योंकि वह जानता है कि हमारी प्रत्येक इच्छा हमारे लाभ का कारण नहीं है।

संसार में ऐसे भी पिता हैं जो अपने बालकों से इतना प्रेम करते हैं, कि उनकी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिये वे अपनी भी कोई चिन्ता नहीं करते। वे रात-दिन परिश्रम करके दुख उठाते हैं, दुर्बल और रोगी हो जाते हैं। परन्तु यदि वही बालक आगे चलकर अपने उसी पिता की बातों का हंसी या ठट्ठा उड़ाने लगें और उसकी आज्ञाओं को तुच्छ समझने लगें, तो उस पिता को कितना अधिक दुख का अनुभव होगा। और मित्रो ऐसा ही दुख हमारे परमेश्वर को भी होता है, जब हम उसकी बातों का हंसी वा ठट्ठा करने लगते हैं; जब हम उसकी आज्ञाओं को तुच्छ समझने लगते हैं। उसने हमारे उद्धार के लिये क्या नहीं किया और क्या नहीं सहा ? हमें, हमारे पापों के कारण, नरक में नाश होने से बचाने के लिये वह स्वर्ग छोड़कर, प्रभु यीशु मसीह के स्वरूप में होकर, पृथ्वी पर आ गया। मनुष्य के स्वरूप में होकर उसने सब प्रकार का विरोध और वाद-विवाद सहा। वह अपनी ही इच्छा से हमारे पापों का प्रायश्चित बनकर क्रूस के ऊपर चढ़ गया। उसने अपने हाथों वा पावों को दे दिया कि उनमें कीलें ठोकी जाएं; उसने अपनी पसली को दे दिया कि उसमें भाला मारा जाए; उसने अपनी देह को दे दिया कि उस पर कोड़े लगाए जाएं ताकि इस प्रकार हमारे सारे पापों का प्रायश्चित हो जाए। उसने हमें बचाने के लिये अपने आप को दे दिया, क्योंकि वह हम से प्रेम करता है। तौभी, यदि हम उसकी आज्ञाओं को न मानें तो हम उसके बलिदान को व्यर्थ ठहराते हैं, और उसके प्रेम को तुच्छ समझते हैं।

वह चाहता है कि हम सब प्रभु यीशु मसीह में विश्वास करें कि वह हमारे पापों के कारण क्रूस के ऊपर मारा गया। उसकी इच्छा है कि हम सब अपने पापों से अपना मन फिराएं। और उसकी आज्ञा है

कि हम में से हर एक विश्वासी अपने-अपने पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा ले। (यूहन्ना ३:१६; प्रेरितों २:३८; मरकुस १६ : १६)। उसने हमारा उद्धार करने के लिये अपने आप को दे दिया, और वह चाहता है कि हम उस उद्धार को प्राप्त करने के लिये अपने आप को उसे दे दें। एक जगह प्रभु यीशु ने कहा, "यदि तुम न फिरो और बालकों के समान न बनो, तो स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करने नहीं पाओगे।" (मत्ती १८ : ३)। मित्रो, हमें चाहिए कि हम बालकों की नाईं बनकर अपने परमेश्वर पिता की प्रत्येक आज्ञा का पालन करें। क्योंकि उसकी आज्ञाओं पर चलकर ही हम उसके बलिदान और प्रेम के प्रति अपनी श्रद्धा और कृतग्यता को प्रगट कर सकते हैं। उसी की आशीष हम सब पर बनी रहे।

—: ० :—

नरक किसके समान है ?

मित्रो :

जगत में बहुतेरी ऐसी वस्तुएं हैं जिनके बारे में हम समझते हैं, परन्तु बहुतेरी ऐसी वस्तुएं भी हैं जिनके बारे में हम वास्तव में ठीक से नहीं समझते। उन्हें हम केवल विश्वास से ही स्वीकार करते हैं। जैसे कि, हम मानते हैं कि मनुष्य के जिस बाहरी व्यक्तित्व को हम अपनी आंखों से देखते हैं, केवल वही मनुष्य नहीं है, लेकिन सच्चाई में मनुष्य आत्मा है। किन्तु आत्मा क्या है ? हम वास्तव में ठीक से नहीं समझते एक जगह प्रभु यीशु ने कहा, कि यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे, परन्तु अपनी आत्मा या प्राण की हानि उठाए तो उसे क्या लाभ होगा ? या मनुष्य अपनी आत्मा के बदले में क्या देगा ? (मत्ती १६ : २६)। तो इस से हम समझते हैं कि आत्मा एक ऐसी वस्तु है जिसका मूल्य जगत की किसी भी वस्तु से नहीं चुकाया जा सकता। और यदि सम्पूर्ण जगत की सारी वस्तुओं को एकत्रित करके उनके साथ एक आत्मा की तुलना की जाए तो वे सब वस्तुएं उसके सामने जली हुई राख के समान हैं। सो इस प्रकार हम देखते हैं कि मनुष्य की आत्मा एक बड़ी ही बहुमूल्य वस्तु है। शायद हम कह सकते हैं, कि मनुष्य की आत्मा एक बड़े ही बहुमूल्य हीरे के समान है।

हम स्वर्ग के बारे में बोलते हैं, हम स्वर्ग के बारे में सुनते हैं। परन्तु स्वर्ग क्या है ? बाइबल में प्रकाशितवाक्य नाम की पुस्तक में परमेश्वर हमें बताता है, कि स्वर्गीय नगर चोखे सोने का वा स्वच्छ कांच के समान है। उसकी नेवें हर प्रकार के बहुमूल्य पत्थरों की हैं। उसके फाटक बहुमूल्य मोतियों के से हैं, और सड़क स्वच्छ कांच के समान

चोखे सोने की है। अब इसका अभिप्राय यह नहीं है, कि सचमुच में स्वर्ग चोखे सोने और स्वच्छ कांच और हर प्रकार के बहुमूल्य मोतियों का एक महल है। परन्तु क्योंकि परमेश्वर जानता है कि हम इन वस्तुओं से परिचित हैं, और ये वस्तुएं हमारी दृष्टि में बड़ी ही सुन्दर और मूल्यवान हैं, इस कारण वह हमें बताता है कि स्वर्गीय नगर इनके समान है। हम सब सुन्दर और बहुमूल्य वस्तुओं से प्रेम रखते हैं, हम उन्हें प्राप्त करना चाहते हैं। और स्वर्ग एक अत्यन्त ही सुन्दर और अत्यन्त ही बहुमूल्य स्थान है, और परमेश्वर चाहता है कि हम सब उस प्रवेश करें। इसी कारण उसने स्वर्ग के महत्व को हमें समझाने के लिये उसकी तुलना ऐसी वस्तुओं से की है जो हमारी दृष्टि में अत्यन्त ही सुन्दर और मूल्यवान हैं। किन्तु वास्तव में, स्वर्ग इनसे भी कहीं अधिक बढ़कर सुन्दर और बहुमूल्य होगा।

परन्तु आज हम विशेष रूप से इस बात पर विचार करेंगे, कि नरक किस के समान है? अब शायद आप में से कुछ लोग इस विषय पर बात करना पसन्द न करें। परन्तु यह एक सच्चाई है। क्योंकि जिस प्रकार जीवन और मृत्यु हैं वैसे ही स्वर्ग और नरक भी हैं। परन्तु नरक क्या है? कुछ लोग सोचते हैं कि मनुष्य को नरक इस पृथ्वी पर ही मिल जाता है। परन्तु यह झूठ है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि अकसर मनुष्य को अपने पाप या अपराध का परिणाम पृथ्वी पर मिल जाता है। जैसे कि मान लीजिए, यदि कोई चोरी करता है और पकड़ा जाता है तो उसे शर्म और जेल का सामना करना पड़ता है। इसी प्रकार यदि कोई मनुष्य पियक्कड़ या जुआरी इत्यादि है तो उसके कारण उसे और साथ में उसके परिवार को भी कई प्रकार के परिणामों का सामना करना पड़ता है। परन्तु यह नरक नहीं है। किन्तु सच्चाई यह है कि मनुष्य पृथ्वी पर भी बड़ी से बड़ी भंयकर परिस्थिति का सामना क्यों न कर ले, तौभी वह नरक नहीं हो सकता। क्योंकि नरक

का सम्बन्ध वास्तव में उस जीवन से है जो इस पृथ्वी के जीवन के बाद आरम्भ होता है।

जिस प्रकार पवित्र बाइबल हमें स्वर्ग के बारे में बताती है, वैसे ही वह हमें नरक के विषय में भी बताती है। एक जगह प्रभु यीशु ने कहा, "एक धनवान मनुष्य था जो बैंजनी कपड़े और मलमल महिनता और प्रतिदिन सुख-विलास और धूमधाम के साथ रहता था। और लाजर नाम का एक कंगाल घावों से भरा हुआ उसकी डेवढ़ी पर छोड़ दिया जाता था। और वह चाहता था, कि धनवान के मेज़ पर की जूठन से अपना पेट भरे; बरन कुत्ते भी आकर उसके घावों को चाटते थे। और ऐसा हुआ कि वह कंगाल मर गया, और स्वर्गदूतों ने उसे लेकर इब्राहीम की गोद में पहुंचाया; और वह धनवान भी मरा; और गाड़ा गया। और अधोलोक में उसने पीड़ा में पड़े हुए अपनी आंखें उठाईं, और दूर से इब्राहीम की गोद में लाज़र को देखा। और उसने पुकारकर कहा, हे पिता इब्राहीम, मुझ पर दया करके लाज़र को भेज दे, ताकि वह अपनी उंगली का सिरा पानी में भिगोकर मेरी जीभ को ठंडी करे, क्योंकि मैं इस ज्वाला में तड़प रहा हूं। परन्तु इब्राहीम ने कहा; हे पुत्र स्मरण कर कि तू अपने जीवन में अच्छी वस्तुएं ले चुका है, और वैसे ही लाज़र बुरी वस्तुएं : परन्तु अब वह यहां शान्ति पा रहा है, और तू तड़प रहा हैं। और इन सब बातों को छोड़ हमारे और तुम्हारे बीच एक भारी गड्ढ़ा ठहराया गया है, कि जो यहां से उस पार तुम्हारे पास जाना चाहें, वे न जा सके। और न कोई वहां से इस पार हमारे पास आ सके। उसने कहा; तो हे पिता मैं तुझ से बिनती करता हूं, कि तू उसे मेरे पिता के घर भेज। क्योंकि मेरे पांच भाई हैं, वह उनके सामने इन बातों की गवाही दे, ऐसा न हो कि वे भी इस पीड़ा की जगह में आएं। इब्राहीम ने उस से कहा, उनके पास तो मूसा और भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तकें हैं, वे उनकी सुनें। उस ने कहा; नहीं, हे पिता इब्राहीम, पर यदि कोई मरे हुओं में से उनके पास जाए, तो वे

मन फिराएंगे। उसने उस से कहा, कि जब वे मूसा और भविष्यद्वक्ताओं की नहीं सुनते, तो यदि मरे हुओं में से कोई जी भी उठे तौभी उसकी न मानेंगे।" (लूका १६ : १९-३१)।

यहां विशेष रूप से हम तीन प्रमुख बातें देखते हैं। अर्थात् दो आदमी रहते थे; दूसरे, वे दोनों मर गए; और तीसरे, उन दोनों की परिस्थिति अगले जीवन में अपने पिछले जीवन से बिल्कुल भिन्न थी। जो पृथ्वी पर धनवान था वह नरक में भिखारी बन गया। और जो पृथ्वी पर कंगाल था वह स्वर्गलोक में धनवान हो गया। पृथ्वी पर वह धनवान मलमल और कीमती वस्त्र पहिनता था, परन्तु वहां उसकी एक-मात्र पोशाक धधकती हुई आग थी। यहां उस कंगाल के पास कुत्ते आकर उसके घाव चाटते थे, परन्तु वहां स्वर्गदूत उसके पास आकर उसकी सेवा कर रहे थे। यहां वह धनवान धूमधाम और सुख-विलास के साथ रहता था, परन्तु वहां वह पानी की एक बूंद के लिये छटपटा और तड़प रहा था। परन्तु क्यों ? क्योंकि उस ने इस जीवन में अपने उद्धार को तुच्छ समझा। यदि वह चाहता तो परमेश्वर के उद्धार की आशीष का जल बे-हिसाब पा लेता। परन्तु उसने इस जीवन में प्रभु के अनुग्रह और उद्धार को कुछ न समझा।

हम देखते है, कि वह नरक में ज्वाला में तड़प रहा था। परन्तु कितने समय तक उसे उसके भीतर तड़पना था ? कब तक उसे वहां रहना था ? पवित्र बाइबल बताती है, कि जिस प्रकार स्वर्ग अनन्त है, उसी प्रकार नरक भी अनन्त है, अर्थात उसका कभी अन्त न होगा। एक जगह यीशु ने कहा, "यदि तेरा हाथ तुझे ठोकर खिलाए तो उसे काट डाल, टुन्डा होकर जीवन में प्रवेश करना, तेरे लिये इस से भला है कि दो हाथ रहते हुए नरक के बीच उस आग में डाला जाए जो कभी बुझने की नहीं।" (मरकुस ९ : ४४)।

हम यहां यह भी देखते हैं, कि वह मनुष्य नरक में बोल सकता था और सुन सकता था, वह देख सकता था और पहिचान सकता था, वह अनुभव

कर सकता था और स्मरण कर सकता था। जब हम कभी बीमार या किसी पीड़ा में होते हैं तो हम चाहते हैं कि हमारे मित्र या सम्बन्धी हमारे साथ रहें। परन्तु नरक की पीड़ा इतनी भयानक थी, कि वह नहीं चाहता था उसके भाई वहां उसके पास आएं। क्योंकि बाइबल एक अन्य स्थान पर हमें बताती है कि नरक आग और गन्धक की एक ऐसी झील के समान है जिसमें अधर्मी रात और दिन युगानुयुग पीड़ा में तड़पते रहेंगे। (प्रकाशितवाक्य २० : १०)।

क्या आप किसी ऐसे स्थान की कल्पना कर सकते हैं, जहां भयंकर अन्धकार के बीच कोई मनुष्य बहुत अधिक पीड़ा के कारण छटपटा और तड़प रहा हो और अपने दांत पीस रहा हो, कोई जहां सुननेवाला न हो, जहां कोई आशा न हो और कोई छुटकारा न हो ? मित्रो, नरक इस से भी कहीं अधिक पीड़ाजनक और भयानक है। और यदि हम में से कोई वहां जाएगा तो इस कारण नहीं कि परमेश्वर ऐसा चाहता है, परन्तु इसलिये क्योंकि हमने अपने जीवन में उसकी आज्ञाओं को नहीं माना। नरक में जाने का कारण केवल एक ही है, अर्थात पाप, या अधर्म, या अपराध। और परमेश्वर ने पाप से छुटकारा पाने के लिये हमें अपने पुत्र यीशु को दे दिया है। वह हमारे पापों को अपनी देह पर लिये हुए क्रूस पर चढ़ गया, जहां उसने हमारे प्रत्येक पाप का प्रायश्चित किया। और परमेश्वर कहता है, कि यदि आज हम यीशु में विश्वास करें और अपने पापों से मन फिराएं और अपने पापों की क्षमा के लिये उसकी आज्ञानुसार बपतिस्मा लें, तो हम अपने पापों से छुटकारा प्राप्त करके अनन्त जीवन में प्रवेश कर सकते हैं। (१ पतरस २ : २४; यूहन्ना ३:१६; मत्ती २८ : १९; प्रेरितों २ : ३८)। सो मित्रो, यह निश्चय हमें अपने लिये स्वयं करना है कि हम कहां प्रवेश करना चाहते हैं।

परमेश्वर आपको उचित निश्चय करने और अपने वचन को मानने के लिये समझ और ताकत दे।

—०—

एक विश्वव्यापी समस्या

मित्रो :

हम एक ऐसे संसार में रहते हैं जिसमें अनेक प्रकार की समस्याएं विद्यमान हैं। और इसमें कोई संदेह नहीं कि हमारी अधिकांश समस्याएं स्वयं हमारी ही उपज हैं, अर्थात हमने स्वयं उन्हें जन्म दिया है। हमारी समस्याएं यद्यपि भिन्न-भिन्न प्रकार की हो सकती हैं, परन्तु हम सबकी एक ऐसी भी समस्या है जिसमें हम सभी समान रूप से भागीदार हैं। और यद्यपि हम अपनी विभिन्न समस्याओं का हल अपने परिश्रम या अपनी बुद्धि के द्वारा निकाल लेते हैं, परन्तु हमारी यह समस्या इस स्वभाव की है कि इसका हल हम स्वयं अपने आप नहीं निकाल सकते। कभी-कभी, जब हम अपनी किसी समस्या को स्वयं अपने आप नहीं सुलझा पाते तो हम किसी और मनुष्य के पास जाते हैं। परन्तु हमारी इस समस्या का समाधान कोई भी मनुष्य नहीं कर सकता। क्योंकि यह हम सबकी समस्या है। और मनुष्य की यह समस्या उतनी ही पुरानी है जितना कि स्वयं मनुष्य है, और उतनी ही सर्वव्यापी है जितना कि स्वयं संसार है। और हम सबकी यह समान समस्या है पाप। संसार में ऐसा कोई भी मनुष्य नहीं है। जिसने कभी कोई पाप न किया हो। पाप न केवल कुछ करके ही किया जा सकता है, परन्तु पाप कुविचारों के द्वारा भी किया जा सकता है। मनुष्य न केवल बुराई करके ही पाप करता है, परन्तु यदि वह अच्छाई न करे तौभी वह पाप करता है। न केवल परमेश्वर की आज्ञाओं को तोड़ना ही पाप है, परन्तु यदि मनुष्य परमेश्वर की आज्ञाओं को न माने तो यह भी पाप है। परन्तु पाप किस प्रकार एक समस्या है ?

(१) पाप इसलिये एक समस्या है, क्योंकि मनुष्य को एक दिन परमेश्वर के पास लौटना है। मान लीजिए, स्कूल में पढ़नेवाला एक लड़का अपना सारा समय फुटबॉल या क्रिकेट खेलने में या इधर-उधर घूमने-फिरने में व्यर्थ कर दे, और तब एकाएक परीक्षा का समय आ जाए। तब क्या होगा ? वह वास्तव में एक समस्या में पड़ जाएगा। वह बिना तैयारी के पकड़ा जाएगा। और इसी प्रकार हर एक वह मनुष्य भी जो अपना जीवन पाप में व्यतीत कर रहा है एक दिन एकाएक परमेश्वर के न्याय का सामना करेगा। बाइबल का एक लेखक कलीसिया को अपने एक पत्र में लिखकर यूं कहता है, "क्योंकि तुम आप ठीक जानते हो कि जैसे रात को चोर आता है, वैसे ही प्रभु का दिन आनेवाला है। जब लोग कहते होंगे, कि कुशल है, और कुछ भय नहीं, तो उन पर एकाएक विनाश आ पड़ेगा, जिस प्रकार गर्भवती पर पीड़ा; और वे किसी रीति से न बचेंगे।" (१ थिस्सलुनीकियों ५ : २, ३)। स्वयं प्रभु यीशु ने कहा, कि जिस प्रकार नूह के दिनों में हुआ, अर्थात जिस दिन तक कि नूह जहाज़ पर न चढ़ा, उस दिन तक लोग खाते-पीते थे, और उन में ब्याह-शादियां होती थीं, और जब तक जल-प्रलय आकर उन सबको बहा न ले गया, तब तक उन को कुछ भी मालूम न पड़ा; वैसे ही मेरा आना भी होगा। (मत्ती २४ : ३६-३९)। मित्रो, मान लीजिए, यदि प्रभु का दिन आज ही आ जाए; या मान लीजिए, परमेश्वर के पास आपको आज ही लौटना पड़े, तो क्या आप परमेश्वर के सामने खड़े होने को तैयार हैं ?

(२) फिर, मित्रो, पाप इस कारण भी एक समस्या है, क्योंकि पाप एक रोग के समान है। मान लीजिए, यदि किसी मनुष्य को कोई रोग लग जाता है, परन्तु वह मनुष्य उसकी ओर कोई ध्यान नहीं देता। और यद्यपि उसका ध्यान उस रोग की ओर दिलाया भी जाता है, परन्तु तौभी वह हंसकर टाल देता है और उसकी कुछ परवाह नहीं करता।

किन्तु फिर एक दिन उस मनुष्य को पता चलता है कि उसका रोग एक घातक और भयंकर रूप धारण कर चुका है, और अब उसके बचने की कोई आशा नहीं। वह मनुष्य वास्तव में एक समस्या में पड़ जाता है, और पछताकर सोचता है, कि कितना ही अच्छा होता यदि वह उचित समय पर अपना ईलाज करवा लेता। परन्तु उसने अवसर के महत्व को तुच्छ समझा। और मित्रो, आज हम में से बहुतेरे इसी प्रकार के एक मनुष्य के समान हैं। जिन्हें अपनी आत्मा की कोई चिन्ता नहीं; जो अपनी आत्मा को बचाने की ओर कोई ध्यान नहीं देते। हम जानते हैं कि हम पापी हैं; हमारा अंतःकरण कहता है कि हम पापी हैं, और परमेश्वर का वचन भी हमें बताता है कि हम सब पाप के वश में हैं और हम सबने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं। (रोमियों ३ : ९, २३ । परन्तु हम सुनकर टाल देते हैं। हम ने कितनी ही बार सुना है कि परमेश्वर का पवित्रशास्त्र हम से कहता है, कि उसने हमारे पापों के प्रायश्चित के लिये अपने वचन को यीशु मसीह में देहधारी बनाकर क्रूस के ऊपर बलिदान किया है, ताकि हम उसके द्वारा अपने पापों से छुटकारा प्राप्त करके पाप के रोग से मुक्त हो जाएं। परन्तु हम सुन-सुनकर टाल देते हैं, क्योंकि हमें अपनी आत्मा की कोई चिन्ता नहीं। किन्तु, मित्रो, मैं आपको विश्वास दिलाकर कहना चाहता हूं, कि एक दिन वह आनेवाला है जिस में आप इन बातों के महत्व का इकरार करेंगे। एक दिन वह आनेवाला है, जिसमें आप अपनी इस बड़ी गलती का अनुभव करेंगे, और आप मानेंगे कि काश हम परमेश्वर की बात मान लेते और उसके अनुग्रह को स्वीकार कर लेते। काश हम मसीह यीशु में विश्वास कर लेते कि वह हमारे पापों के बदले में क्रूस के ऊपर मारा गया, और उसकी आज्ञा के अनुसार अपने सारे पापों से मन फिराकर अपने पापों की क्षमा के लिये जल के भीतर बपतिस्मा ले लेते। परन्तु मित्रो, वह दिन उद्धार का दिन न होगा, क्योंकि पवित्र बाइबल कहती है कि उद्धार का दिन तो आज और अभी है। (२

कुरिन्थियों ६ : २)। किन्तु वह दिन वास्तव में न्याय का दिन होगा। पवित्र बाइबल कहती है, "इसलिये परमेश्वर अज्ञानता के समयों से आनाकानी करके अब हर जगह सब मनुष्यों को मन फिराने की आज्ञा देता है। क्योंकि उसने एक दिन ठहराया है, जिस में वह उस मनुष्य के द्वारा धर्म से जगत का न्याय करेगा, जिसे उस ने ठहराया है और उसे मरे हुओं में से जिलाकर यह बात सब पर प्रमाणित कर दी है।" (प्रेरितों १७ : ३०, ३१)।

(३) परन्तु पाप न केवल इसी कारण एक समस्या है, क्योंकि मनुष्य को एक दिन परमेश्वर के सामने आना है और क्योंकि यह एक रोग के समान है, परन्तु पाप इसलिये भी मनुष्य के लिये एक समस्या है क्योंकि यह एक ऐसा मार्ग है जो मनुष्य को विनाश की ओर ले जाता है। पवित्रशास्त्र का एक लेखक कहता है, कि, "ऐसा मार्ग है, जो मनुष्य को ठीक दीख पड़ता है, परन्तु उसके अन्त में मृत्यु ही मिलती है।" (नीतिवचन १४ : १२)। और पाप एक ऐसा ही मार्ग है। जो इस पर चलते हैं उन्हें उसमें कोई बुराई नज़र नहीं आती। परन्तु यह एक ऐसा मार्ग है जो मनुष्य को धीरे-धीरे विनाश की तरफ़ ले जाता है। पवित्र बाइबल में एक जगह लिखा है, "परन्तु प्रत्येक व्यक्ति अपनी ही अभिलाषा से खिंचकर और फंसकर परीक्षा में पड़ता है, फिर अभिलाषा गर्भवती होकर पाप को जनती है, और पाप जब बढ़ जाता है तो मृत्यु को उत्पन्न करता है।" (याकूब १ : १४, १५)।

पाप सचमुच में मनुष्य की एक गम्भीर समस्या है। परन्तु, मित्रो, परमेश्वर का धन्यवाद हो जिसने हमसे ऐसा प्रेम रखा कि हमारे पापों से हमें मुक्त कराने के लिये उसने अपने ही पुत्र को हमारे पापों के बदले में बलिदान कर दिया।

क्या आप की समस्या गरीबी है? क्या आपकी समस्या नौकरी है? या क्या आपकी समस्या पारीवारिक या सामाजिक है? मित्रो,

मैं आप से एक बार फिर कहना चाहता हूं, कि मनुष्य की सबसे बड़ी समस्या "पाप" है। परन्तु क्योंकि परमेश्वर ने हमारी इस समस्या को हमारे लिये हल कर दिया है, हमें चाहिए कि हम परमेश्वर को धन्यवाद दें और उसके बरदान को स्वीकार करें।

परमेश्वर अपने वचन को समझने और उस पर चलने के लिये आपको ताकत दे।

— ० —

वचन में शक्ति है

मित्रो :

सचमुच में इस बात से मुझे बड़ी ही खुशी है कि बाइबल अध्ययन के इस समय आज मैं एक बार फिर से आपके सम्मुख उपस्थित हूं। यद्यपि हम एक दूसरे को देख नहीं सकते, किन्तु तौभी रेडियो तथा साहित्य एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा हम एक दूसरे के साथ बातें कर सकते हैं। बिल्कुल यही बात हम परमेश्वर और अपने सम्बन्ध में भी देखते हैं। अर्थात, परमेश्वर का वचन सुनते हुए हम उसे साक्षात देख तो नहीं सकते, परन्तु पवित्र बाइबल एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा आज वह हम से बातें करता है। फिर, जिस प्रकार अभी मैं इस माध्यम के द्वारा आप सबसे एक ही सी बात कह रहा हूं, अर्थात् इस समय जो लोग रेडियो के इस माध्यम से मेरी आवाज़ सुन रहे हैं, वे चाहे इस वक्त बिहार में हों या महाराष्ट्र में हों, नेपाल में हों या भूटान में हों, वे सब एक ही बात सुन रहे हैं। इसी प्रकार, परमेश्वर का वचन, पवित्र बाइबल, पृथ्वी पर कहीं भी पढ़ा जाए वह सदा हम सबको एक ही शिक्षा या उपदेश देता है। कभी-कभी अकसर सुनने में आता है, कि कुछ लोग कहते हैं कि उन्हें प्रभु का दर्शन स्वपन में प्राप्त हुआ, या उन्हें कोई प्रकाश दिखाई दिया, और प्रभु ने उन्हें कोई विशेष आदेश दिया या उन्हें बताया कि उन्हें उद्धार प्राप्त करने के लिए क्या करना चाहिए। मित्रो, इस बात में कोई सच्चाई नहीं है। यह व्यर्थ, और शत-प्रतिशत झूठ है। वह केवल एक स्वपन मात्र ही हो सकता है, परन्तु निश्चय ही वह परमेश्वर की आवाज़ नहीं हो सकती। क्योंकि यदि आज परमेश्वर स्वपन इत्यादि के द्वारा लोगों

को अलग अलग आदेश देता है, तो फिर हमें उसके वचन की क्या आवश्यकता ठहरी ? हमें बाइबल की फिर कोई आवश्यकता नहीं। फिर, यदि प्रभु मुझे स्वपन में दिखाई देकर कोई विशेष आदेश दे सकता है तो वह आपको भी अवश्य देगा। क्योंकि परमेश्वर किसी का तरफ़दार नहीं है। वह हम सबसे प्रेम रखता है, और चाहता है कि हम सबका उद्धार हो।

परन्तु, मित्रो, आज परमेश्वर संसार में किसी भी मनुष्य से व्यक्तिगत रूप से बातें नहीं कर रहा है। क्योंकि जो कुछ भी वह चाहता है कि मनुष्य जाने और करे, उस सबको उसने अपने वचन में हमारे लिये प्रगट किया है। इसीलिए बाइबल में पाई जानेवाली पुस्तकों के सम्बन्ध में एक जगह यों लिखा है: "हर एक पवित्र शास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और उपदेश, और समझाने, और सुधारने, और धर्म की शिक्षा के लिये लाभदायक है। ताकि परमेश्वर का जन सिद्ध बने, और हर एक भले काम के लिये तत्पर हो जाए।" (२ तीमुथियुस ३ : १६, १७)।

गलतिया नाम के एक स्थान पर प्रभु यीशु के अनुयायीयों को गलतियों के नाम लिखी अपनी पत्री के पहिले अध्याय में प्रेरित पौलुस लिखकर कहता है: "मुझे आश्चर्य होता है, कि जिसने तुम्हें मसीह के अनुग्रह से बुलाया उस से तुम इतनी जल्दी फिरकर और ही प्रकार के सुसमाचार की ओर झुकने लगे। परन्तु वह दूसरा सुसमाचार है ही नहीं : पर बात यह है, कि कितने ऐसे हैं, जो तुम्हें घबरा देते, और मसीह के सुसमाचार को बिगाड़ना चाहते हैं। परन्तु यदि हम या स्वर्ग से कोई दूत भी उस सुसमाचार को छोड़ जो हमने तुमको सुनाया है, कोई और सुसमाचार तुम्हें सुनाए, तो श्रापित हो। जैसा हम पहिले कह चुके हैं, वैसा ही मैं अब फिर कहता हूँ, कि उस सुसमाचार को छोड़ जिसे तुमने ग्रहण किया है, यदि कोई और सुसमाचार सुनाता है, तो श्रापित हो।" (गलतियों १ : ६-९)।

सो हम देखते हैं, मित्रो, कि जिस सुसमाचार को परमेश्वर ने हमें अपने वचन में दिया है, जिन आज्ञाओं को उसने हमारे लिये अपनी पुस्तक पवित्र बाइबल में दिया है, उन्हें छोड़ हमें और किसी भी अन्य बात को ग्रहण नहीं करना चाहिए। भले ही वे बातें चाहे किसी प्रचारक के आदेश हों या किसी स्वर्गदूत के उपदेश ! हमें अपने स्वपनों तथा अनुभवों पर विश्वास नहीं करना चाहिए, परन्तु हमारा विश्वास परमेश्वर के वचन पर होना चाहिए। क्योंकि उसका वचन सत्य है, और सिद्ध है। वह हमारा उद्धार कर सकता है, और हमें जीवन देता है, और श्रोताओ, उसी का वचन एक दिन हम सबका न्याय भी करेगा।

सो परमेश्वर का वचन हमें क्या बताता है ? जब हम परमेश्वर के वचन को पढ़ते हैं, तो हम देखते हैं, कि उसका वचन हमें बताता है, कि परमेश्वर ने आदि में सम्पूर्ण सृष्टि की रचना की। उसने मनुष्य को अपनी ही समानता पर, अर्थात् अपनी पवित्रता के स्वरूप पर अपनी महिमा के लिये सृजा। उसने मनुष्य को अपनी आज्ञाएँ वा आदेश दिए। परन्तु मनुष्य ने परमेश्वर के आदेशों का उल्लंघन किया। उसने परमेश्वर की महिमा करना छोड़कर स्वयं अपने आप को ऊपर उठाना चाहा। सो इस प्रकार मनुष्य का पतन हुआ, और वह परमेश्वर की समानता के स्तर से नीचे गिर गया। सो लिखा है, कि सबने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं। (रोमियों ३ : २३)।

परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो, मित्रो, कि उसका वचन केवल हमें यही नहीं बताता कि हम सब ने पाप किया है और उसकी महिमा से रहित हैं, परन्तु एक अन्य स्थान पर उसके वचन में हम इस प्रकार पढ़ते हैं : "क्योंकि पाप की मजदूरी तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का बरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है।" (रोमियों ६ : २३)। सो जबकि पाप के कारण मनुष्य को मृत्यु दन्ड प्राप्त होता

है, दूसरी ओर, मसीह यीशु में होने के कारण उसे परमेश्वर का बरदान, अर्थात अनन्त जीवन प्राप्त होता है। इसीलिये एक जगह यों लिखा है, "क्योंकि तुम सब उस विश्वास करने के द्वारा जो मसीह यीशु पर है परमेश्वर की सन्तान हो। और तुम में से जितनों ने मसीह में बपतिस्मा लिया है उन्होंने मसीह को पहिन लिया है।" (गलतियों ३ : २६, २७)। इसलिये यदि आज आपने मसीह में बपतिस्मा लेकर उसे पहिन लिया है, यदि आज आप मसीह में हैं, तो परमेश्वर आपको आज एक पापी के रूप में नहीं परन्तु अपनी सन्तान के रूप में देखता है। परमेश्वर का वचन बताता है, कि यीशु ने हमारे सारे पापों को अपने ऊपर ले लिया जिनके कारण हम नाश हो रहे थे। परमेश्वर का वचन कहता है, कि पाप की मजदूरी मृत्यु है; और यीशु ने हमारे पापों के कारण क्रूस के ऊपर मृत्यु दन्ड सहा। इसलिये, परमेश्वर का बरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है, और उसका वचन कहता है कि उसे कोई भी मनुष्य प्राप्त कर सकता है।

मित्रो, इसी प्रकार परमेश्वर का वचन हमें यह भी बताता है, कि एक दिन वह प्रभु यीशु मसीह के द्वारा जगत के सारे लोगों का न्याय करेगा, और जो उस पर विश्वास नहीं लाते और उसके सुसमाचार की आज्ञाओं को नहीं मानते उन्हें वह भारी दन्ड देगा। उसी के वचन में एक जगह इस प्रकार लिखा है: "उस समय जबकि प्रभु यीशु अपने सामर्थी दूतों के साथ, धधकती हुई आग में स्वर्ग से प्रगट होगा। और जो परमेश्वर को नहीं पहिचानते, और हमारे प्रभु यीशु के सुसमाचार को नहीं मानते उन से पलटा लेगा। वे प्रभु के सामने से और उसकी शक्ति के तेज से दूर होकर अनन्त विनाश का दन्ड पाएंगे।" (२ थिस्सलुनीकियों १ : ७-९)।

क्या आप परमेश्वर के वचन पर विश्वास रखते हैं ? क्या आप उसके वचन में दी गई प्रत्येक आज्ञाओं को मानने का प्रयत्न कर रहे

हैं ? मित्रो, जीवन अनिश्चित है, किन्तु परमेश्वर का वचन निश्चित है। यदि आज आप उसके वचन को नहीं मानेंगे, तो वही भविष्य में एक दिन आपको दोषी ठहराएगा। प्रभु यीशु ने एक जगह कहा, "आकाश और पृथ्वी टल जाएंगे, परन्तु मेरी बातें कभी न टलेंगीं।" (मत्ती २४ : ३५)। पवित्र बाइबल का लेखक कहता है, "क्योंकि हर एक प्राणी घास की नाईं है, और उसकी सारी शोभा घास के फूल की नाईं है : घास सूख जाती है, और फूल झड़ जाता है। परन्तु प्रभु का वचन युगानुयुग स्थिर रहेगा।" (१ पतरस १ : २४, २५)।

अपने वचन में परमेश्वर कहता है : "जिस प्रकार से वर्षा और हिम आकाश से गिरते हैं और वहाँ यों ही लौट नहीं जाते, वरन भूमि पर पड़कर उपज उपजाते हैं जिस से बोनेवाले को बीज और खानेवाले को रोटी मिलती है, उसी प्रकार से मेरा वचन भी होगा जो मेरे मुख से निकलता है; वह व्यर्थ ठहरकर मेरे पास न लौटेगा, परन्तु, जो मेरी इच्छा है उसे वह पूरा करेगा, और जिस काम के लिये मैंने उसको भेजा है उसे वह सुफ़ल करेगा।" (यशायाह ५५ : १०-११)।

सो इस प्रकार हम देखते हैं, मेरे श्रोताओ, कि परमेश्वर का वचन स्थिर है, वह कभी व्यर्थ न ठहरेगा, परन्तु जिस उद्देश्य से उसे उस ने हमें दिया है उसे वह पूरा करेगा। वह हमें इस जीवन में दिया गया है, और इसी के द्वारा अन्तिम दिन हम सब का न्याय होगा। हमें चाहिए कि हम उसे पढ़ें और उसमें लिखी आज्ञाओं को मानें। क्योंकि जो उसे ग्रहण करेंगे वे आशीष पाएंगे। परन्तु जो उसे तुच्छ जानेंगे वे उसी के द्वारा दोषी ठहराए जाएंगे।

परमेश्वर अपने वचन की शक्ति और महत्व को समझने के लिये आपको बुद्धि दे।

—: o :—

जीवन के वचन

मित्रो :

बाइबल अध्ययन के इस समय का हमारे जीवनों में वास्तव में बहुत बड़ा महत्व है, क्योंकि इस समय हम परमेश्वर के वचन के ऊपर ध्यान लगाते हैं। बाइबल में भजन संहिता नाम की एक पुस्तक है। इसमें एक-सौ-पचास भजन हैं जो ईश्वरीय प्रेरणा के द्वारा परमेश्वर की प्रशंसा और स्तुति में लिखे गए हैं। आज हम अपने पाठ में इस पुस्तक में लिखे एक–सौ–उन्नीसवें भजन में से देखेंगे। निश्चय ही, इस थोड़े से समय में हम इस पूरे भजन पर तो विचार नहीं कर सकते, किन्तु इसमें कुछ ऐसे पद या आयतें हैं जो वास्तव में बड़ी ही विचारपूर्ण हैं, और उन्ही पर आज हम अपने पाठ में विचार करेंगे। ये आयतें हमें बताती हैं, कि परमेश्वर के वचन से प्रेम रखनेवाले मनुष्य के लिये उसका वचन कितना अधिक अर्थपूर्ण और महत्वपूर्ण है।

यहां चौथे पद में परमेश्वर को सम्बोधित करके लेखक कहता है, "तू ने अपने उपदेश इसलिये दिए हैं, कि वे यत्न से माने जाएं।" वास्तव में कोई भी मनुष्य परमेश्वर के मार्ग पर तब तक नहीं चल सकता जब तक कि वह उसके मार्ग पर चलने का यत्न न करे, क्योंकि उसका मार्ग सकरा और कठिन है। प्रभु यीशु ने एक जगह कहा, "सकेत द्वार से प्रवेश करने का यत्न करो, क्योंकि मैं तुम से कहता हूं, कि बहुतेरे प्रवेश करना चाहेंगे, और न कर सकेंगे।" (लूका १३ : २४)। "क्योंकि सकेत है वह फाटक" यीशु ने कहा, "और सकरा है वह मार्ग जो जीवन

को पहुंचाता है, और थोड़े हैं जो उसे पाते हैं।" (मत्ती ७ : १४)।

आगे वह कहता है, "मैं ने तेरे वचन को अपने हृदय में रख छोड़ा है, कि तेरे विरुद्ध पाप न करूं।" अकसर कुछ लोग कहते हैं, कि हम परमेश्वर के वचन पर चलना तो चाहते हैं, परन्तु चल नहीं पाते। मित्रो, इसका यही कारण है, अर्थात जब हम उसके वचन को अपने मनों पर अधिकार ही नहीं देते तो फिर हम कैसे उसके वचन की अगुवाई में चल सकते हैं? जब हम अपने मनों को उस भूमि के समान बना लेते हैं जो मार्ग के किनारे है, जिस पर बीज पड़ते ही उसे चिड़ियें चुग लेती हैं, तो फिर कैसे हम उसके वचन पर चल सकते हैं? जब शैतान ने यीशु की परीक्षा की थी, तो यीशु ने उसकी प्रत्येक बात का जवाब यह कहकर दिया था, कि परमेश्वर के वचन में यूं लिखा है। (मत्ती ४)। क्या आप अपने सामने आनेवाली प्रत्येक बुराई और लालच और परीक्षा का सामना इसी प्रकार करते हैं? हमें न केवल प्रभु के वचन को पढ़ने वा सुनने की ही आवश्यकता है, परन्तु हमें चाहिए कि हम उसके वचन को अपने मनों पर अधिकार दें। केवल तभी हम पाप वा अधर्म का सामना कर सकते हैं।

फिर, ४० वें पद में वह कहता है, "देख, मैं तेरे उपदेशों का अभिलाषी हूं; अपने धर्म के कारण मुझ को जिला।" किसी भी बात में संतुष्टि और तृप्ति प्राप्त करने से पहिले अभिलाषा का होना आवश्यक है। यदि हमारे मन में किसी वस्तु को प्राप्त करने की अभिलाषा है तो हम उसे प्राप्त करने के लिये परिश्रम और प्रयत्न करेंगे और जब वह वस्तु हमें मिल जाएगी तो हमें बड़ी संतुष्टि वा तृप्ति का अनुभव होगा। यदि मुझे भोजन की अभिलाषा है तो उसे प्राप्त करके न केवल मैं आनन्दित होऊंगा परन्तु उसे खाकर मुझे संतुष्टि और तृप्ति का अनुभव भी होगा। और यही बात आत्मिक दृष्टिकोण से भी इतनी ही सच है। प्रभु यीशु ने एक जगह कहा, "धन्य हैं वे, जो धर्म के भूखे और

पियासे हैं, क्योंकि वे तृप्त किए जाएंगे।" (मत्ती ५ : ६)। हम में से बहुतेरे ऐसे हैं जिन्हें प्रभु के वचन को सुनने पर कोई सन्तुष्टि वा तृप्ति का अनुभव नहीं होता, क्योंकि उनके भीतर अभिलाषा नहीं है। वे उसके वचन को इच्छा और अभिलाषा के साथ नहीं सुनते; वे उसे केवल एक कथा या कहानी के दृष्टिकोण से सुनते हैं। और प्रत्यक्ष ही है, कि बिना अभिलाषा के तृप्ति असम्भव है।

और, फिर वह आगे कहता है, "तब मैं अपनी नामधराई करने वालों को कुछ उत्तर दे सकूंगा, क्योंकि मेरा भरोसा तेरे वचन पर है।" (पद ४२)। क्या आप भी ऐसा ही कह सकते हैं? क्या आप कह सकते हैं, कि मेरा भरोसा परमेश्वर के वचन पर है? जब परमेश्वर ने इब्राहीम से कहा, कि, "अपने देश, और अपनी जन्म भूमि, और अपने पिता के घर को छोड़कर उस देश में चला जा जो मैं तुझे दिखाऊंगा।" (उत्पत्ति १२ : १) तो लिखा है, कि उस ने तत्काल परमेश्वर की आज्ञा का पालन किया। जब प्रभु यीशु ने चुंगी लेनेवाले मत्ती को चुंगी की चौकी पर बैठे देखा, और उस से कहा कि मेरे पीछे हो ले, तो लिखा है कि वह तुरन्त अपनी कुर्सी छोड़कर उसके पीछे हो लिया। (मरकुस २ : १४, १५) जब शाऊल को हनन्याह ने प्रभु की आज्ञानुसार कहा, कि अब क्यों देर करता है? उठ, अपने पापों को धो डालने के लिये बपतिस्मा ले। तो उस ने तत्काल उठकर बपतिस्मा लिया। (प्रेरितों २२ : १६; ९ : १८)। परन्तु आज, जब प्रभु अपने वचन के द्वारा हम से कहता है, कि उसके वचन को मानकर हम मुक्ति पा लें, तो हम सुनकर टाल देते हैं। स्पष्ट ही है, कि हम उसके वचन पर भरोसा नहीं रखते। परन्तु छोटे बच्चे अपने माता पिता पर भरोसा रखते हैं; वे उन पर आश्रित रहते हैं और उनकी आज्ञा मानते हैं। और प्रभु यीशु ने कहा, "कि जो कोई परमेश्वर के राज्य को बालक की नाईं ग्रहण न करे, वह उस में कभी प्रवेश करने न पाएगा।" (मरकुस

१० : १५) । क्या आप उसमें एक बालक के समान भरोसा रखते हैं ?

फिर आगे वह कहता है, "मैं ने तेरी आज्ञाओं को मानने में बिलम्ब नहीं फुर्ती की है।" (पद ६०) मित्रो, बिलम्ब एक ऐसी वस्तु है जिसके कारण न जाने कितने लोगों को अपनी-अपनी आत्मा की हानि उठानी पड़ेगी। कभी-कभीं हम प्रभु की आज्ञाओं को सुनकर उन्हें मानने का निश्चय करते हैं। परन्तु हम सोचते हैं, कि फिर कभी कर लेंगे, किसी और अच्छे अवसर पर मान लेंगे। परन्तु वह "फिर कभी", वह "अच्छा अवसर" शायद हमारे जीवन में कभी न आए। शैतान नहीं चाहता कि हम प्रभु की आज्ञा मानकर उद्धार पाएं। और इसीलिये वह हमारे सामने लालच और ऐसी परिस्थितियां लाकर खड़ी कर देता है, जिनके कारण हम उसकी आज्ञाओं को सुनकर टाल दें। सो इसलिये वह कहता है, कि मैंने तेरी आज्ञाओं को मानने में विलम्ब नहीं, फुर्ती की है।

फिर वह कहता है, "तेरे वचन मुझ को कैसे मीठे लगते हैं, वे मेरे मुंह में मधु से भी मीठे हैं।" (पद १०३) यह हमें दिखाता है, कि वह प्रभु के वचनों का कितना अधिक अभिलाषी था; उन्हें सुनकर उसे कितना मज़ा और आनन्द आता था। परन्तु सभी लोग इस प्रकार के नहीं होते। क्योंकि बहुतेरे ऐसे भी हैं जो उस धनी नौजवान की तरह हैं जो प्रभु के पास एक बार यह जानने को आया, कि अनन्त जीवन का वारिस होने के लिये मैं क्या करूं ? वह मनुष्य अपने धन से बड़ा प्रेम रखता था, वह बड़ा धनी था, और उसे अपने धन पर बड़ा भरोसा था। सो जब यीशु ने उस से कहा, कि तू अपना सब कुछ छोड़कर मेरे पीछे हो ले, तो लिखा है कि प्रभु का वचन सुनकर उसके चेहरे पर उदासी छा गई, प्रभु की बात सुनकर उसे बड़ा ही अफ़सोस हुआ, और वह शोक में डूबा हुआ लौटकर वापस चला गया। और आज हम में से बहुतेरों का व्यवहार उसके वचन के प्रति ऐसा ही है। हम कदाचित

धनी न हों, परन्तु बहुतेरी अन्य ऐसी बातें हमारे जीवनों में हो सकती हैं, जिनके कारण हम उसके वचन को सुनकर ठोकर खाते हैं। कई बार हम उसके वचन को सुनना नहीं चाहते, और अनेक बार उसका वचन हमें कड़वा लगता है। परन्तु उपदेशक कहता है, कि तेरे वचन मुझ को कैसे मीठे लगते हैं, वह मेरे मुंह में मधु से भी मीठे हैं!

और फिर थोड़ा आगे चलकर वह कहता है, "तेरा वचन मेरे पांव के लिये दीपक, और मेरे मार्ग के लिये उजियाला है।" (पद १०५)। दीपक या प्रकाश के महत्व और आवश्यकता को हम केवल अन्धेरे में ही अनुभव कर सकते हैं। दिन के समय हमें दीपक का कोई ध्यान नहीं रहता, किन्तु जैसे-जैसे शाम का अन्धकार बढ़ता जाता है और रात होती जाती है हमें दीपक की आवश्यकता का अनुभव होने लगता है। परन्तु परमेश्वर के वचन की आवश्यकता का, जो हमारे पांव के लिये दीपक और हमारे मार्ग के लिये उजियाला है हम में से बहुतेरों को कोई अनुभव नहीं होता। कदाचित हम अन्धे हैं, हमारी आंखों पर परदा पड़ा हुआ है, क्योंकि केवल एक अन्धे मनुष्य को ही दीपक की आवश्यकता का अनुभव नही होता। मित्रो, यदि हम अपनी आंखे खोलकर देखें तो हम अपने आप को पाप और अधर्म के अन्धकार में घिरा हुआ पाएंगे। और उस अन्धकार से हमें केवल प्रभु का वचन ही छुटकारा दिला सकता है। क्योंकि उसका वचन हमें बताता है, कि हम किस प्रकार अपने पापों से छुटकारा प्राप्त करके उसके वचन के प्रकाश में चलकर अनन्त जीवन में पहुंच सकते हैं।

आज के पाठ के ऊपर परमेश्वर अपनी आशीष दे, और उन सबको भी जो उसके वचन को सुनते और उस पर चलते हैं।

—:o:—

बाइबल के सम्बन्ध में

परमेश्वर का धन्यवाद हो कि एक बार फिर से उसके वचन का अध्ययन करने के लिये हम एकत्रित हैं। आज मैं आपको बाइबल के बारे में कुछ बड़ी ही आवश्यक बातों को बताने जा रहा हूं। सो मेरा विश्वास है कि हम सब इन बातों को ध्यान लगाकर सुनेंगे। मेरे पास अक्सर बहुतेरे प्रश्न आते हैं बाइबल के सम्बन्ध में, जिनके कारण मैं ऐसा अनुभव करता हूं कि हम में से बहुतेरे ऐसे हैं जो इस महत्वपूर्ण पुस्तक के बारे में ठीक से नहीं जानते। परन्तु आज अपने पाठ में हम देखेंगे कि बाइबल वास्तव में क्या है।

सो आईए, सबसे पहिले हम यह देखें, कि बाइबल शब्द का क्या अर्थ है? बाइबल को आरम्भ में सबसे पहिले इब्रानी और यूनानी भाषा में लिखा गया था। आज हमारे पास जो बाइबल है यह उन्हीं भाषाओं का अनुवाद है। बाइबल शब्द को यूनानी भाषा से लिया गया है, जिसका अर्थ है एक पुस्तक। अक्सर इस पुस्तक को हम पवित्र बाइबल भी कहते हैं। इसका अभिप्राय यह नहीं है कि इस पुस्तक का कागज़ या स्याही पवित्र है, परन्तु वास्तव में पवित्र वह वचन है जो इसमें लिखा हुआ है। कभी-कभी अक्सर देखने में आता है कि कुछ लोग इस पुस्तक के कागज़ और स्याही का तो बड़ा आदर करते हैं, अर्थात यदि गलती से उनके हाथ से यह पुस्तक नीचे गिर जाए तो वे इसे उठाकर चूमने लगते हैं, परन्तु दूसरी ओर; जो बातें इसमें लिखीं हैं उन्हें पढ़ने और मानने की ओर वे कोई ध्यान नहीं देते। उनके लिये केवल यह पुस्तक ही पवित्र

है, अर्थात इसका कागज़ और स्याही। परन्तु सच्चाई यह है कि यह पुस्तक कागज़ और स्याही के दृष्टिकोण से नहीं, किन्तु इसलिये पवित्र है क्योंकि इसमें लिखा हुआ प्रत्येक शब्द परमेश्वर की प्रेरणा द्वारा लिखा गया है।

अब ज़रा इस बात पर ध्यान दें, कि मान लीजिए मैं एक पुस्तक लिखता हूं, और कुछ वर्षों के बाद कोई और मनुष्य किसी और देश में एक और पुस्तक लिखता है। सौ-दो-सौ साल के बाद कोई और आदमी किसी अन्य देश में एक और पुस्तक लिखता है। अर्थात लगभग आनेवाले डेढ़ हज़ार वर्षों के भीतर ऐसे लगभग तीन दर्जन आदमी अलग-अलग देशों और सांस्कृतियों के भीतर रहकर अपनी-अपनी पुस्तकें लिखते हैं। परन्तु लगभग दो हज़ार साल बाद ये सारी पुस्तकें किसी के पुस्तकालय में विद्यमान हों, और वह उनमें से एक-एक को निकालकर पढ़ता है, किन्तु देखता है कि ये सारी पुस्तकें एक ही विषय के ऊपर लिखी हुई हैं, मानो उन सब को एक ही लेखक ने लिखा हो। क्या ऐसा वास्तव में हो सकता है? किन्तु तौभी यही सच्चाई हम बाइबल के सम्बन्ध में देखते हैं।

बाइबल वास्तव में छियासठ पुस्तकों से मिलकर बनी एक पुस्तक है, अर्थात इस पुस्तक के भीतर छियासठ पुस्तकें हैं। इन पुस्तकों के अलग-अलग नाम हैं, और अधिकांश रूप से ये नाम पुस्तकों के लेखकों के नामों पर ही आधारित हैं। जैसे यशायाह की पुस्तक। क्योंकि इस पुस्तक को यशायाह ने लिखा था, इसलिये इसको यशायाह की पुस्तक कहा जाता है। इसी प्रकार, बाइबल में हमें दानिय्येल, यूहन्ना और पतरस इत्यादि की पुस्तकें मिलती हैं। ये सब इन पुस्तकों के लेखक हैं, और जो-जो पुस्तक उन्होंने लिखी वह उन्हीं के नामों से कहलाईं। परन्तु बाइबल में कुछ पुस्तकों के नाम पुस्तक के विषय के आधार पर दिए गए हैं। जैसे, उत्पत्ति की पुस्तक। क्योंकि यह

पुस्तक जगत की सृष्टि के विषय में बताती हैं, इसलिये इसे उत्पत्ति की पुस्तक कहते हैं। परन्तु बाइबल की इन छियासठ पुस्तकों को चालीस आदमियों ने सोलह सौ वर्षों के भीतर लिखा था। ये सब अलग-अलग स्थानों पर जन्में थे, और इनका आपस में एक-दूसरे से परिचित होने का तो सवल ही नहीं उठता, क्योंकि सोलह सौ वर्षों के लम्बे समय में किसी का जन्म कहीं हुआ था और किसी का कहीं। लेकिन इन सब बातों के होते हुए भी जब इन सभी पुस्तकों को एक साथ इकट्ठा किया गया, तो प्रगट हुआ कि ये सारी पुस्तकें एक ही विषय पर लिखी हुई हैं—मानो इन सब पुस्तकों को एक ही लेखक ने लिखा हैं। इन छियासठ पुस्तकों में से उन्तालिस पुस्तकें हमें बताती हैं, कि सारा जगत पापी है, और परमेश्वर जगत का उद्धार करने के लिये स्वर्ग से पृथ्वी पर एक उद्धारकर्त्ता को भेजने जा रहा है। और फिर इन उन्तालिस पुस्तकों के बाद लिखी गई सत्ताईस पुस्तकें हमें बताती हैं, कि किस प्रकार वह उद्धारकर्त्ता जगत में आया और मनुष्य के उद्धार के लिये उसने क्या काम किया। यही पुस्तकें हमें यह भी बताती हैं कि उस उद्धारकर्त्ता ने मनुष्य को उद्धार पाने के लिये क्या करने की आज्ञा दी, और फिर वह किस प्रकार स्वर्ग में वापस चला गया, और जगत का न्याय करने के लिये वह एक दिन फिर वापस आएगा।

अब जब हम बाइबल को खोलकर देखते हैं, तो इसमें हमें दो भाग मिलते हैं। पहिले भाग में तो वे उन्तालिस पुस्तकें हैं जो जगत में उद्धारकर्त्ता के आने से पहिले लिखी गई थीं, इन्हें हम पुराना नियम कहते हैं। और दूसरे भाग में वे सत्ताईस पुस्तकें हैं जिन्हें हम नया नियम कहते हैं, और ये पुस्तकें उद्धारकर्त्ता के जगत में आने के बाद लिखी गई थीं। इसलिये, जिन बातों को हम पुराने नियम में पढ़ते हैं, ये वे बाते हैं जो परमेश्वर ने उन लोगों से कहीं जो उद्धारकर्त्ता के आने तक रहे। परन्तु जिन बातों को हम नए नियम में पढ़ते है, ये वे बातें है जो परमेश्वर

आज हम से कह रहा है, क्योंकि हम उद्धारकर्त्ता के जगत में आने के बाद के समय में रहते हैं। यहां यह कह देना भी बड़ा ही उचित होगा, कि यद्यपि कि इन सभी पुस्तकों को मूसा और पौलुस और यूहन्ना जैसे ईश्वर-भक्त लोगों ने लिखा, किन्तु परमेश्वर ने अपने वचन को लिखवाने के लिये इन सब लोगों को इस प्रकार इस्तेमाल किया कि उन्होंने केवल वही कुछ लिखा जो परमेश्वर ने उन से लिखवाया। इस बात का प्रमाण न केवल हमें इन पुस्तकों की एकरुपता में ही मिलता हैं, परन्तु हम यह भी देखते हैं कि बहुतेरी ऐसी बातें, जो उन्होंने आज से हज़ारों वर्ष पूर्व इन पुस्तकों में लिखी थीं, उनके बारे में उन्हें कोई ज्ञान न था। सो यदि किसी बात का मुझे ज्ञान ही न हो, तो मैं उसके बारे में कैसे कह सकता हूं जब तक कि परमेश्वर मेरे साथ न हो ? इसके अतिरिक्त, स्वयं बाइबल में एक जगह हम इस प्रकार पढ़ते हैं : "क्योंकि कोई भी भविष्यवाणी मनुष्य की इच्छा से कभी नहीं हुई पर भक्त जन पवित्र आत्मा के द्वारा उभारे जाकर परमेश्वर की ओर से बोलते थे। (२ पतरस १ : २१)।

अक्सर बाइबल के सम्बन्ध में कभी-कभी यह सवाल भी पूछा जाता है, कि इसके पृष्ठों पर नम्बर या गिनती क्यों लिखी हुई है ? मित्रो, जिस वर्तमान रूप में बाइबल आज हमारे पास है आरम्भ में यह इस प्रकार एक सुन्दर पुस्तक के रूप में विद्यमान न थी। उस समय इसके लेखों की लिपियां ही अलग-अलग उपलब्ध थीं। परन्तु बाद में जब उन लिपियों को एकत्रित किया गया और उन्हें एक पुस्तक का रूप दिया गया, तो पढ़ने और समझने में हमारी सुविधा के लिये इसके लेखों को अध्यायों में बांट दिया गया, सो किसी पुस्तक में पचास अध्याय हैं तो किसी में चालीस और किसी में सोलह या तेरह। इसी प्रकार, प्रत्येक अध्याय को पदों या आयतों में बांटा गया है। यह सब हमारी सुविधा के लिये है। जैसे कि मान लीजिए, कोई मुझ से पूछता है कि आरम्भ में मनुष्य कहां से आया ? तो मैं कह सकता हूं, कि बाइबल में उत्पत्ति

की पुस्तक के २ अध्याय के ७ पद में लिखा है, कि, "परमेश्वर ने आदम को भूमि की मिट्टी से रचा और उसके नथनों में जीवन का श्वास फूंक दिया; और आदम जीवता प्राणी बन गया।" इसी प्रकार मान लीजिए, कोई मुझ से पूछता है, कि मनुष्य को उद्धार पाने के लिये क्या करना चाहिए ? तो मैं उसे बता सकता हूं, कि बाइबल में मरकुस की पुस्तक के १६ अध्याय के १६ पद में लिखा है, कि प्रभु यीशु ने कहा, कि, "जो विश्वास करेगा और बपतिस्मा लेगा उसी का उद्धार होगा।" सो इस तरह बाइबल में से किसी भी वाक्य को तत्काल ढूंढ़ निकालने के लिये इसकी पुस्तक को अध्यायों और आयतों में बांटा गया है।

सो मेरी आशा है, कि अब जब आप बाइबल को पढ़ेंगे, तो ये बातें उसे समझने और उसके महत्व को पहिचानने में आपकी आवश्यक सहायता करेंगी। परमेश्वर अपने वचन को समझने और उस पर चलने के लिये आपको सामर्थ दे।

—: o :—

एक विशाल निश्चय !

मित्रो :

एक बार फिर से मेरे पास यह सुअवसर है, कि मैं आपके मनों को परमेश्वर के वचन की ओर लगाऊं । क्या यह सचमुच में हमारे लिये बड़े ही सौभाग्य और आशीष की बात नहीं है कि न केवल एक दिन परमेश्वर हम सब का न्याय ही करेगा, परन्तु उसने हमें अपना वचन भी दिया है जिस में वह हमें बताता है कि हमारा न्याय किस आधार पर होगा । परमेश्वर के वचन, अर्थात पवित्र बाइबल से हम सीखते हैं, कि परमेश्वर ने मनुष्य को बनाया । फिर उसने अपनी इच्छा पर चलने के लिये और मनुष्य की अगुवाई करने के लिये उसे अपना वचन दिया । परन्तु मनुष्य परमेश्वर की इच्छा पर न चला, और इस प्रकार वह पापी ठहरा । क्योंकि परमेश्वर की इच्छा पर न चलना ही पाप है । एक जगह पवित्र बाइबल में लिखा है कि जो कोई पाप करता है वह परमेश्वर के वचन का विरोध करता है, और परमेश्वर के वचन का विरोध करना ही पाप है । (यूहन्ना ३ :४) । सो इसलिये, पाप से बचने के लिये मनुष्य को चाहिए कि वह परमेश्वर के वचन को पढ़े और उसकी इच्छा को माने ।

परमेश्वर का वचन हमें बताता है, कि यद्यपि हमने पाप किया है और अपने पापों के कारण हम अपने परमेश्वर से दूर और अलग हैं । किन्तु तौभी यदि हम अपना मन फिराएं और उसकी आज्ञाओं को माननेवाले हो जाएं तो वह हमारे पापों को क्षमा करेगा और हमारा उद्धार करेगा । मित्रो, मैं यहां जिस परमेश्वर का उल्लेख आप के सामने

कर रहा हूं वह वही परमेश्वर है जिसने आपकोऔर मुझे जीवन दिया है। जो सम्पूर्ण सृष्टि का कर्त्ता और मालिक है। वह, जो देखता है और सुनता है; और आशीष तथा ताड़ना देता है। वह परमेश्वर महान सर्वज्ञानी, तथा सर्वविद्यमान् है। कोई ऐसा कार्य नहीं है जो नहीं जो कर सकता; कोई ऐसा जीवन नहीं है जो उसकी आंखों से छिपा है; और इस समय भी वह आपके मन के विचारों को जांच रहा है। जी हां मैं अपने किसी अंधविश्वास के कारण आपको एक निर्जिव, शक्तिहीन वा काल्पनिक ईश्वर के विषय में नहीं बता रहा हूं। परन्तु मैं आपक ध्यान उस एकमात्र सच्चे वा जीवते परमेश्वर की ओर दिला रहा हूं जो एक दिन हम सबका न्याय करेगा। क्या आप वास्तव में सुन रहे हैं ?

उसी का वचन एक जगह हमें बताता है कि, "इसलिये परमेश्वर अज्ञानता के समयों से आनाकानी करके, अब हर जगह सब मनुष्यों को मन फिराने की आज्ञा देता है। क्योंकि उसने एक दिन ठहराया है, जिस में वह उस मनुष्य के द्वारा धर्म से जगत का न्याय करेगा, जिसे उसने ठहराया है और उसे मरे हुओं में से जिलाकर यह बात सब पर प्रमाणित कर दी है। (प्रेरितों १७ : ३०, ३१)। यहां एक बड़ी ही विशेष बात हम यह देखते हैं, कि मनुष्य को यह निश्चय दिलाने के लिये कि परमेश्वर के न्याय से कोई मनुष्य नहीं बचेगा, उसने अपने पुत्र यीशु मसीह को मृत्यु पश्चात फिर से जिला दिया। इस प्रकार परमेश्वर ने मनुष्य को यह प्रमाण दिया, कि जैसे उस ने अपने पुत्र यीशु को फिर से जिला उठाया, उसी प्रकार वह एक दिन प्रत्येक मनुष्य को मृतकों में से जीवित कर देगा। इसलिये अवश्य है कि हम में से प्रत्येक जन एक दिन प्रभु यीशु के न्यायासन के सामने खड़ा होगा।

किन्तु कुछ लोगों का विचार है कि हम चाहे कैसा भी जीवन व्यतीत करें, परमेश्वर हमारा न्याय नहीं करेगा। उनका कहना यह है, कि क्योंकि परमेश्वर प्रेम है, इस कारण वह किसी को भी दन्ड नहीं देगा,

परन्तु सबका उद्धार करेगा। किन्तु, यह विचार गलत है। क्योंकि परमेश्वर का वचन हमें ऐसा नहीं बताता। प्रभु यीशु ने कहा, कि जिस दिन सबका पुनरुत्थान होगा, तो उस समय 'जिन्होंने भलाई की है वे जीवन के पुनरुत्थान के लिये जी उठेंगे,, और "जिन्होंने बुराई की है वे दन्ड के पुनरुत्थान के लिये जी उठेंगे। और यह अनन्त दन्ड भोगेंगे परन्तु धर्मी अनन्त जीवन में प्रवेश करेंगे।" (यूहन्ना ५ : २९; मत्ती २५ : ४६)। सो यहां से हम देखते हैं कि न्याय के दिन परमेश्वर के सम्मुख केवल दो ही प्रकार के लोग होंगे। अर्थात, धर्मी और अधर्मी ! वे, जो अनन्त जीवन में प्रवेश करेंगे, और वे, जो अनन्त मृत्यु दन्ड भोगेंगे ! किन्तु मित्रो, उस दिन हम में से प्रत्येक व्यक्ति कौन से स्थान पर होना पसन्द करेगा, इसका निश्चय हमें आज ही करना है। जी हां, आज आपके सामने यह एक बहुत बड़ा निश्चय हैं ! प्रभु के उस महान न्याय के दिन उसके सम्मुख आप किन लोगों के बीच खड़े होंगे ? क्या उन लोगों के साथ जो उसकी दाहिनी ओर होंगे ? या उन लोगों के साथ जो उसकी बाई ओर होंगे ? क्या उस दिन आप उन लोगों की मंडली के बीच खड़े होने जा रहे हैं, जिन से वह यों कहेगा "हे मेरे पिता के धन्य लोगो, आओ, उस राज्य के अधिकारी हो जाओ, जो जगत के आदि से तुम्हारे लिये तैयार किया हुआ है !" या क्या आप उन लोगों की मंडली में पाए जाएंगे जिन्हें वह यूं कहकर दन्ड देगा, "हे स्त्रापित लोगो, मेरे सामने से उस अनन्त आग में चले जाओ, जो शैतान और उसके दूतों के लिये तैयार की गई है।" (मत्ती २५ : ३४, ४१)।

मित्रो, परमेश्वर चाहता है कि आप उसके राज्य में प्रवेश करें। वह चाहता हैं कि हम उस अनन्त जीवन को प्राप्त करें जो हमें उसके पुत्र यीशु मसीह में प्राप्त होता है। इसलिये वह आज्ञा देकर कहता है, कि हर जगह सब मनुष्य अपना-अपना मन फिराएं। यह बड़ा ही आवश्यक है। क्योंकि मनुष्य के जीवन में अनेक ऐसी वस्तुएं विद्यमान

हो सकती हैं जिनके कारण वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने के योग्य न ठहरेगा। पवित्र बाइबल का एक लेखक कहता है : "शरीर के काम तो प्रगट हैं, अर्थात व्यभिचार, गन्दे काम, लुचपन, मूर्ती पूजा, टोना, बैर, झगड़ा, ईर्ष्या, क्रोध, विरोध, फूट विधर्म, डाह, मतवालापन, लीलाक्रीड़ा, और इनके ऐसे और-और काम हैं, इनके विषय में मैं तुमको पहिले से कह देता हूं जैसा पहिले कह भी चुका हूं, कि ऐसे-ऐसे काम करनेवाले परमेश्वर के राज्य के वारिस न होंगे।" (गलतियों ५ : १९-२१)। यही लेखक बाइबल में एक अन्य स्थान पर यों कहता हैं : "क्या तुम नहीं जानते, कि अन्यायी लोग परमेश्वर के राज्य के वारिस न होंगे ?" सो वह कहता है, 'धोखा न खाओ, न वेश्यागामी, न मूर्ती पूजक न परस्त्रीगामी, न लुच्चे, न पुरुषगामी, न चोर, न लोभी, न पियक्कड़, न गाली देनेवाले, न अन्धेर करनेवाले परमेश्वर के राज्य के वारिस होंगे।" (१ कुरिन्थियों ६ : ९-१०)।

सो यदि आपके जीवन में आज इनमें से कोई भी वस्तु विद्यमान है, तो परमेश्वर आप से कह रहा है कि आप उन वस्तुओं से अपना मन फिराएं। क्योंकि, यदि आप अपना जीवन उन्हीं में व्यतीत करेंगे, तो निश्चय ही न्याय के दिन वही वस्तुएं आपके नाश का कारण सिद्ध होंगी। परन्तु क्योंकि परमेश्वर आपको नाश होने से बचाना चाहता है, इसलिये वह कहता है कि प्रत्येक मनुष्य अपना मन फिराए। किन्तु परमेश्वर अपने वचन में मनुष्य को न केवल मन फिराने ही की आज्ञा देता है। परन्तु उसकी इच्छा है कि आप उसके पुत्र यीशु में विश्वास लाएं। उसका वचन कहता हैं, "क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।" यूहन्ना ३ : १६)।

क्योंकि जब आप अपना मन फिराते हैं तो आप इस बात का निश्चय करते हैं कि अब आप पाप में जीवन नहीं बिताएंगे।

किन्तु प्रभु यीशु में विश्वास करने के द्वारा आप अपने उन पापों से उद्धार प्राप्त करने के लिये उसके निकट आते हैं जो आपने अपने अब तक के जीवन में किए हैं। क्योंकि परमेश्वर ने अपने पुत्र यीशु को हमारे स्थान पर हमारे पापों का दन्ड भोगने के लिये दे दिया। उसने उसे मनुष्यों के हवाले कर दिया कि वे उसे क्रूस पर लटकाकर मृत्यु दन्ड दें। इसलिये जबकि यीशु ने हमारे पापों का दन्ड स्वयं अपने ऊपर ले लिया, तो हम उसमें विश्वास लाकर निश्चय ही उद्धार पाएंगे। परन्तु प्रभु यीशु ने मरकुस १६ : १६ में कहा, कि जो मनुष्य मुझ में विश्वास करेगा और बपतिस्मा लेगा उसी का उद्धार होगा। इसी बात को यीशु का प्रेरित पोलुस बाइबल में एक जगह बड़े ही अकृषक ढंग से समझाकर यों कहता है : "क्या तुम नहीं जानते, कि हम जितनों ने मसीह यीशु का बपतिस्मा लिया, तो उसकी मृत्यु का बपतिस्मा लिया ? सो उस मृत्यु का बपतिस्मा पाने से हम उसके साथ गाड़े गए, ताकि जैसे मसीह पिता की महिमा के द्वारा मरे हुओं में से जिलाया गया, वैसे ही हम भी नए जीवन की सी चाल चलें। क्योंकि यदि हम उसकी मृत्यु की समानता में उसके साथ जुट गए हैं, तो निश्चय उसके जी उठने की समानता में भी उसके साथ जुट जाएंगे। क्योंकि हम जानते हैं, कि हमारा पुराना मनुष्यत्व उसके साथ क्रूस पर चढ़ाया गया, ताकि पाप का शरीर व्यर्थ हो जाए, ताकि हम आगे को पाप के दासत्व में न रहें।" (रोमियों ६ : ३-६)।

मित्रो, क्या आप पाप के दासत्व से स्वतंत्र होना चाहते हैं ? क्या आप अपने पापों से उद्धार प्राप्त करके परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना चाहते हैं ? आपको चाहिए कि आप परमेश्वर के वचन की इन बातों के ऊपर गम्भीरता पूर्वक विचार करें। यदि इन बातों के सम्बन्ध में हम आपकी कोई सहायता कर सकते हैं, तो हमें अवश्य ही सूचित करें।

परमेश्वर अपने वचन पर चलने के लिये आपको सामर्थ दे।

—: o :—